वर्ष १३ अंक ९
दिसम्बर सन् १९७०

Scanned by CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भवपार कहानी।]

वर्ष १३ अंक ९

दिसम्बर सन् ७०
मार्ग शीर्ष सं० २०२७

—:o:—

प्राप्ति स्थान
व्यवस्थापक अमर सन्देश
२३, पाण्डेय बाजार
आजमगढ़ (उ० प्र०)

—:o:—

प्रकाशक
चिरौली सन्त आश्रम
कृष्ण नगर
मथुरा
टेलीफोन नं० २४१

—:o:—

सम्पादक
विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—:o:—

वार्षिक मूल्य
६-०० रु०
एक प्रति का मूल्य ५० पै०

अमर सन्देश के नियम

१-अमर सन्देश हर माह की २६ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले ही मिल जाता है।

२-जिस माह की ५ तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न प्राप्त हो तो अप्राप्ति की सूचना भेजनी चाहिये।

३-पता परिवर्तन की सूचना जब २० तारीख के पहले प्राप्त होगी तभी उस माह में पता परिवर्तन होगा अन्यथा अपने डाकखाने से व्यवस्था करें।

४-अमर सन्देश का वार्षिक चन्दा भेजने का पता व्यवस्थापक अमर सन्देश, २३, पाण्डेय बाजार, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश है। मनीआर्डर कूपन पर अपना नाम पता लिखना न भूलें तथा यह भी अवश्य लिखें कि किस माह से ग्राहक बनना चाहते हैं। हमारा वर्ष अप्रेल माह से प्रारम्भ होता है। यदि आप कूपन पर कोई माह न लिखेंगे तो हम उसे अप्रेल माह से मान लेंगे।

५-अमर सन्देश पायः रा ते में गुम हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण गुरुदेव जी के प्रति जानने लिए लोगों के हृदय में उत्सुकता है। वे सोचते हैं कि अमर सन्देश के द्वारा हम गुरुदेव जी की जानकारी कर लेंगे। ऐसी दशा में यदि आप को कोई अंक न प्राप्त हों तो ५ तारीख के बाद आप कृपया दुबारा अंक भेजने के लिए अपनी ग्राहक संख्या, नाम और पता लिख मुझे सूचित करें। हम आप को १५ तारीख तक दुबारा पत्रिका भेजेंगे।

—व्यवस्थापक
अमर सन्देश
२३, पाण्डेय बाजार
आजमगढ़ (उ० प्र०)

Scanned by CamScanner

❀ जय गुरुदेव ❀

अमर सन्देश

दौड़ो दौड़ो भागे आओ

दौड़ो दौड़ो भागे आओ,
आओ प्यारे दर्शन पाओ ।
भारत की सुख शान्ति निशानी,
निकल पड़ी जन-जन को जगानी ।
कोई मछली मांस न खानी,
हत्या जीव न कोई करनी ।
अण्डे मुर्गी कोई न खानी, मदिरा ताड़ी कोई न पीनी ॥
चोरी जारी कोई न करनी, निन्दा भारी पाप न करनी ।
द्वेष राग में कोई न रहनी, झूठ कपट में कोई न फसनी ॥
बकरी गाय सूवर न खानी, सब में एक आत्मा जानी ।
हिंसा निन्दा कोई न करनी, घड़ा पाप का कोई न भरनी ॥
भारत भूमि हमारी जननी, जन-जन की यह ज्ञान निशानी ।
तोड़ फोड़ को कोई न करनी, अगनी आग कोई न लगानी ॥
धन्ना धरना कोई न देनी, उग्र रुप को कोई न करनी ।
संदेश शान्ति का हमको देनी, भारत भूमि हमारी जननी ॥
गोरखपुर से चली निशानी, जन-जन को देगी जनक निशानी ।
संदेश प्रेम का जनतंत्र निशानी, जनसंघ जन-जन की जनतंत्र निशानी
भजन नाम का प्यारे करनी, सुरत शब्द की राह चलनी ।
अगुवा कार गुरु को करनी, ध्यान गुरु का आगे धरनी ॥
भेद नाम गुरु से लेनी, साधन भजन में मन को देनी ॥
आस विश्वास सभी की तजनी, आस विश्वास गुरु की करनी ।
हंसी खुशी से जग में रहनी, नाम गुरु का पल-पल जपनी ॥
प्रेम परसपर पल-पल लेनी, महिमा गुरु की हरदम करनी ।

Scanned by CamScanner

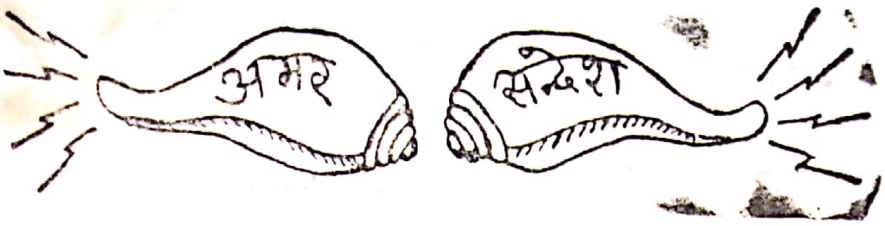

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर सन् ७०

पूर्वी क्षेत्रों के दौरे का आंखों देखा वर्णन

दिनांक २२-१०-७० को सुबह ८ बजे गोरखपुर से फैजाबाद के लिये प्रस्थान किये। गोरखपुर से चल कर खलीलाबाद में प्रेमियों से मिले वहां से बस्ती के लिये चल दिये दाता दयालु प्रभू परम पूज्य स्वामी जी महराज बड़े ही मौज में हैं। ६ बज कर ४५ मि० पर बस्ती पहुँचे तथा प्रेमियों की प्रतिक्षा २० मिनट तक की। सभी प्रेमी अमहर पर मिले। एक घंटे तक यात्रा के पड़ाव के सम्बन्ध में वहां के लोगों को समझाकर फैजाबाद के लिये प्रस्थान कर रहे हैं। अयोध्या रामघाट के पास पड़ाव की व्यवस्था का निरीक्षण करके फैजाबाद सेठ भगवान दास के यहां गये उसके पश्चात लखनऊ के लिये प्रस्थान कर दिया।

दिनांक २३-१०-७० को लखनऊ में रहे प्रेमियों को यात्रा के विषय में बहुत सी बातें दिन भर बताते रहे तथा सायंकाल सत्संग भी हुआ और स्वामी जी महराज दि० २४-१०-७० को लखनऊ से चलकर सीधे फैजाबाद होते हुये गोन्डा पहुँचे। रात्रि का विश्राम सिनहा जी के यहां हुआ तथा सतसंगियों का सतसंग भी हुआ।

२५-१०-७० को स्वामी जी महराज गोन्डा से सीधे बरईजोत में पहुँचे। दिन में २ बजे से ४ बजे तक सत्संग हुआ।

२६-१०-७० को स्वामी जी महराज बरईजोत से से चल कर बभनान मिश्र जी के यहां पहुँचे तथा सायंकाल ४ बजे से ६ बजे तक सत्संग वहीं हुआ। उसके बाद २७-१०-७० को स्वामी जी महराज बभनान से करीब १२ बजे चलकर १॥ बजे परशुरामपुर पहुँचे। वहां २ बजे से ४ बजे तक सतसंग हुआ और उसी रात जिवधरपुर हरैया डाक बंगला पर १२ बजे पहुँचे। जिवधरपुर में ता० २८-१०-७० को १२ से २ बजे तक सत्संग तथा १४३ आदमियों ने नामदान प्राप्त किया २॥ से ४॥ तक नामदान हुआ एवं नामदान के तुरन्त बाद गोरखपुर के लिय चले आये तथा गोरखपुर करीब सात बजे पहुँचे।

२९-१०-७०। आज दिवाली का सत्संग गोरखपुर रेलवे कालोनी में हुआ। बड़ी अपार भीड़ हो गई थी। दि० ३०-१०-७० को पूज्य स्वामी जी महराज मेल ट्रेन से मनकापुर के लिये ११ बजकर ४५ मिनट पर गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। ट्रेन १ घंटे लेट थी। अपार जनसमूह स्वामी महराज को स्टेशन पर छोड़ने के लिय गया। इस भीड़ को देख कर सारी जनता हैरत में पड़ गया था। आखिर यह कौन हैं जिन्हें इतने लोग पहुँचाने आये हैं। अन्त में पूरे जन मानस में जय गुरुदेव की ध्वनि लग गयी सभी दर्शन के लिय नर नारी लालायित हो गये और स्वामी जी महराज मनकापुर के लिये चल दिये वहां ३ बजे पहुँचकर ४ बजे से ६ बजे तक सत्संग समारोह सम्पन्न हुआ। जनता पर अपार असर हुआ और ३७ व्यक्तियों ने नामदान लिया। रात्रि विश्राम हुआ।

Scanned by CamScanner

३१-१०-७० को स्वामी जी महराज मनकापुर से बस्ती के लिये १० बजे प्रस्थान किये सायं ७-१० तक सत्संग किये तथा जिले के बड़े अधिकारी भविष्य वाणियों को सुनकर भौचक्के से रह गये स्वामी जी महराज ने कहा कि जो मांस मदिरा खायेंगे आगे वे अध्यापक और पदाधिकारी बरखास्त कर दिये जायेंगे और उनकी पेन्सन बन्द कर दी जायेगी तथा फिर उनका कोई मुकदमा ही नहीं चलेगा। ३१-१०-७० को सुबह नामदान हुआ तथा यह भी कहा कि जो मांस मछली मदिरा का सेवन करेगें उन्हें नौकरियां भी नहीं मिलेगी। १-११-७० को कडेसर के लिये चलकर खलीलाबाद में १०½ बजे पहुँचे हैं एवं वहां से करीब पौने दो बजे कडेसर ग्राम में पहुँचे कडेसर बड़े ही घोर देहात में है।

२-११-७० को खुटवा खलीलाबाद में तथा बघौली ३-११-७० को सुबह ८ बजे केसार-धनरिया पखुआपार में। अनेक प्रेमियों के भाग्य जगाने तथा सबके घरों में गये। सभी दिल्ली के लिए तैयार रहे। तथा सायंकाल ७ बजे से ९ बजे तक सिकटहा में सतसंग हुआ। एवं ९॥ बजे ११॥ बजे तक नामदान हुआ।

४-११-७० को खलीलाबाद में सतसंग हुआ तथा ११४ आदमियों को नामदान हुआ।

५-११-७० को रेलवे कालोनी में सतसंगियों का सतसंग हुआ। अपार भीड़ थी जिसे देख कर जन-मानस हिल रहा था। सभी दुनियांदार भयभीत निगाह से देख रहे हैं। भविष्य वाणियों को सुनने के बाद सभी कहने लगे कि अगर साल में दो चार दिन मांस मछली खाते हैं तो उसे बंद कर देंगे।

६-११-७० गजपुर को गोरखपुर का सतसंग दातादयालु प्रभु ने कई स्थानों का सतसंग अमान्य करके गजपुर का सतसंग स्वीकार कर लिए। १२ बजे से २ बजे तक सतसंग हुआ। तथा २॥ बजे से ४॥ बजे तक नामदान हुआ और सायंकाल परमपूज्य स्वामी जी महाराज ग्राम कौवाडील में पधारे तथा प्रेमियों से दिल्ली चलने के लिए हर प्रकार से तैयार रहने की फूक लगायी। सभी प्रेमी नर-नारी दिल्ली के लिए तैयार हैं। उसके बाद ७ बजे कौड़ीराम लौट कर चले आये।

७-११-७० गणेसरी कौड़ीराम गोरखपुर से १ मील पश्चिम में है। वह ठाकुर लोगों का गांव है। यहां पर सभी स्वामी जी महराज के सतसंग सुनने दर्शन करने के लिए सभी लालायित हैं और तमाम गांवों से ब्राह्मणों का मण्डल आया है सभी चन्दन जोर शोर में लगाये हैं। सब प्रतीक्षा में नाना प्रकार की कामनायें लेकर बैठे हैं। ४३ आदमियों ने नामदान लिया।

सन्त दर्शन से ही विकल्पों का नाश

प्रार्थना चल रही है। तमाम ब्राह्मण और ठाकुर लोग आये हैं और आपस में होड़ लगी है कि जयगुरुदेव जी ऐसे है वैसे हैं। रामायण नहीं मानते। भगवान को नहीं मानते, अपने को ही भगवान कहते हैं और अपनी पूजा करवाते हैं। यही सब विकल्प चल रहा है कि इतने ही देर में स्वामी जी महाराज का शुभागमन हुआ और सभी दर्शन के लिए टूट पड़े दर्शन मात्र से सभी कहने लगे "अरे यह तो बड़े अच्छे महात्मा हैं देखो सबको हाथ जोड़कर मिल रहे हैं।"

इसके बाद सतसंग का समय हुआ और सतसंग में रामायण के राम-केवट सम्वाद को सुनाया गया। रामायण का

Scanned by CamScanner

सम्वाद सुनकर सभी आश्चर्य में पड़ गये। सब की सारी की सारी शंकाओं का अन्त हो गया और सतसंग समाप्ति के बाद सभी परम पूज्य स्वामी जी महराज से माफी मांगने लगे कि महाराज हम तो अफवाहों को सुनकर आप के पास नहीं आते थे। परन्तु आज तो सारा भ्रम दूर हो गया। महाराज जी मुझे क्षमा कर दें। और आज हमारे गांव पर चलें।

इतने ही देर में सर्वोदय इन्टर कालेज के प्रधानाचार्य ने भी बताया कि महाराज जी मैं भी अब तक भ्रम में था परन्तु आज मेरा सब भ्रम दूर हो गया। मेरी इच्छा है कि मुझे क्षमा करते हुए आज मेरे विद्यालय में १५ मिनट का समय दे दें। मैं जानता हूँ कि आपके पास समयाभाव है, परन्तु मुझे क्षमा करते हुए समय दें। मैं चाहता हूँ कि आप के अमृत वचनों से हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों का भी लाभ हो।

अन्त में स्वामी जी महराज ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा विद्यालय में ४५ मिनट का समय दिये और सभी अध्यापकों एवं बच्चों के अन्दर जो गलत फहमी थी वह दूर हो गई। इस प्रकार से धर्मोपदेश के बाद जब स्वामी जी महराज चलने लगे तो सभी अध्यापक प्रधानाचार्य एवं छात्रों ने सदभावना के साथ बिदाई दी। तथा अपनी भूल के लिए सभी ने क्षमा चाहा। तथा बाबा जी ने क्षमा कर, उनको अमृत वचनों का पान कराया। ८-११-७० को आनन्द नगर इन्टर कालेज के मैदान में २ बजे से ४ बजे तक सतसंग हुआ तथा १५० आदमियों ने नामदान लिया। ९-११-७० कुईबाजार का सतसंग गोरखपुर। जिले का टापू कुईं बाजार का अनोखा सतसंग दृश्य। चारो तरफ नदियों से घिरा हुआ यह ७ टोले का गांव है तथा यह चारो तरफ से बांधों द्वारा सुरक्षित है। यहां के पीड़ित एवं दुखी मनुष्यों का जीवन पूर्णतया स्वामी जी महाराज की कृपा से सुरक्षित है यहां के भीषण देहातों में रहने वाले लोगों का प्रेम सेवा त्याग को देखकर विश्व के परिवर्तन की झलक स्पष्ट हो जाती है। देवियां आंखों में आंसू भरे कतार में खड़ी होकर परमपूज्य स्वामी जी महाराज का दर्शन करती हैं। सभी अपने हाथों में गेहूँ की राशि स्पर्श कराने के लिए लेकर खड़ी हैं। यह अनोखा प्रेम और दृश्य देखकर संसार की अजीब सी झलक दिखाई देती है। यह परमपूज्य स्वामी जी महाराज का अनोखा प्रेम पाकर बावले हो गये हैं। और तन, मन, धन सब इनपर निछावर करने को सदैव तैयार है। यहां पर १०० आदमियों ने नामदान लिया।

१०-११-७० को ग्राम रामपुर सोनबरसा में सतसंग हुआ तथा यहां से बहुत से प्रेमी दिल्ली जाने के लिए तैयार हैं। ११-११-७० को सतसंग ग्राम रामपुर मिश्री में ११ बजे से १ बजे तक हुआ तथा नामदान भी हुआ और १०८ आदमियों ने नामदान अर्थात् ईश्वर प्राप्ति का रास्ता लिया।

ग्राम हरपुर ढाढ़ा में भी आज ही सायंकाल ५ बजे से ७ बजे तक सतसंग हुआ और १७८ आदमियों ने नामदान लिया। बहुत से लोग भूल में नामदान से वंचित रह गये और बाद में पश्चाताप करने लगे।

खजनी बाजार का सतसंग

आज दिनांक १२-११-७० है परन्तु स्वामी जी महराज बांसगांव के इस प्रसिद्ध बाजार में १ घंटे का सतसंग किये जिसे सुनकर पूरे खजनी बाजार में हलचल मच गयी और वही हाल हो गयी जो कौड़ीराम की रही। अन्त में यहां से स्वामी जी महाराज ग्राम अहिरौली में सतसंग करने को चल दिये।

Scanned by CamScanner

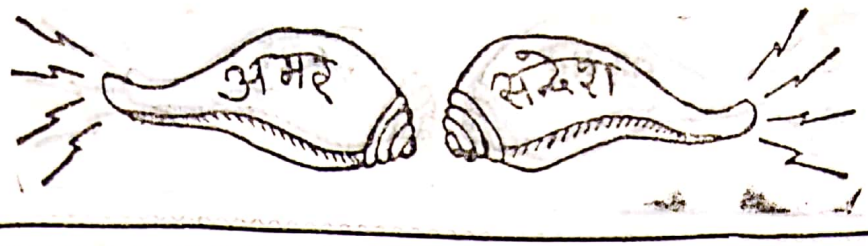

सबका भगवान एक है

भगवान को पाने का सभी जातियों में एक ही रास्ता है। कोई हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई बनते हैं। किन्तु सबका भगवान एक है। उनके यहां आने जाने का एक ही रास्ता है। यह बात आप को महापुरुष बतायेंगे। हम लोग आजकल समझने लगे हैं कि भगवान नहीं हैं लेकिन यह बात निराधार है। समय आने पर सब मालूम हो जायेगा। हमारे यहां कोई जात-पांत का भेद भाव नहीं। परिवार की सेवा करो जो समय बच जाय वह जीवात्मा के लिए दिया करो। प्राचीन काल के ऋषि मुनियों ने यही कहा। यह किसी ने नहीं कहा कि परिवार छोड़ दो। एक दूसरे से प्रेम करो। हमें उस दिन के बचाव के लिये अभी से काम करना है। भगवान सबका एक है और सबमें है और सबके पाने का रास्ता एक ही है।

यह संसार मुसाफिरखाना है

लोग मनुष्य जीवन को समझें। मरने के बाद कोई किसी से मिल नहीं सकता। यह संसार एक मुसाफिर खाना है। इस संशय में कोई अपना नहीं। ये आदमी बीच में ही मिले और बीच में ही छूट जायेंगे। हम समझते हैं ये हमारे पति हैं, ये हमारी पत्नी है, ये हमारे बच्चे हैं, यह हमारा धन है। किन्तु मरने के बाद सब सम्बन्ध छूट जायेगा। यहां कैसे रहना चाहिये यह तुम्हें महात्मा ही बतायेंगे।

शिवनेत्र सबके पास है

ऐसा मौका फिर आप को नहीं मिलेगा। इस किराये के मकान में एक शिवनेत्र है। जिस रास्ता से जीवात्मा को अलग कर देता है वह रास्ता आपको महापुरुषों के पास मिलेगा जिसने अपना शिवनेत्र खोल लिया है। अगर हमारी चर्म आंखें खराब हो जांय तो हम कैसे संसार की वस्तुओं को देख सकते हैं? उसी तरह हमारी तीसरी आंख गन्दगी के आ जाने से बन्द हो गई है जिससे कि हम ईश्वर को नहीं देख सकते। इसी शरीर में सब कुछ है। हम अपनी आंख को गन्दा कर दिये हैं अगर वह साफ हो जाती तो हम मरण जीवन के सम्बन्ध से छुट जाते। बाइबिल, कुरान तथा सभी धर्मों के पुस्तकों में लिखा हुआ है। हम इसी कार्य के लिये इस किराये के मकान में भेजे गये हैं।

आगे समय खराब आयेगा

हमें अपने कर्मों के अनुसार फल मिलेगा। हम अगर किसी को मारेंगे, काटेंगे तो हमें मार काट का फल मिलेगा। आप किसी भी जाति के क्यों न हों, अन्त में आप इन्सान हैं। सभी की आत्मा ईश्वर ने बनाया। बुरे को छोड़ो अच्छे का अपनाओ। दुनियां में आग लगी है। अभी आगे और उत्पात, लूटपाट, खून खराबी होगी। अब तो आप ने जो नहीं सुना, नहीं देखा वह देखने सुनने को मिलेंगे। अन्तिम लक्ष मनुष्य का था भगवान को पाने का। एक वक्त ऐसा आयेगा जब आदमी आदमी को उठाने वाला नहीं मिलेगा। आप खूब खाओ, खूब पहनो पर आप तो मुरदों को खाते हैं। तुम जिसको काटोगे वह तुमको काटेगा। महात्मा आप को बहुत अच्छी शिक्षा देते हैं। जब जब आये तब तब अपने वक्त में सभी ने यह शिक्षा मनुष्यों को दी।

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर सन् ७०

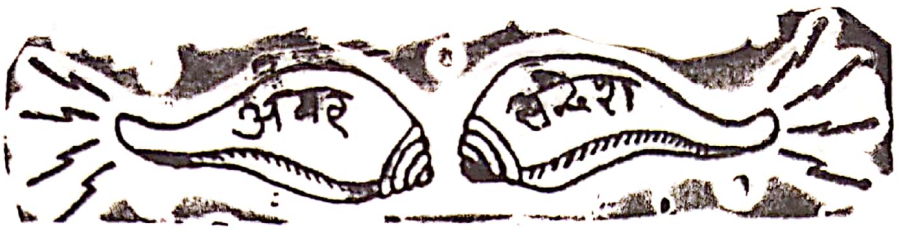

खींचकर पानी पीने वाला मांस नहीं खाता

अन्तिम लक्ष्य जो मनुष्य शरीर का है वह ईश्वर प्राप्ति करने का है। समय आने पर दया मिलेगी। समय की बात है। पशुओं को आप देखिये जो खींचकर पानी पीते हैं, जीभ से चाटते नहीं, जो पशु. पक्षी खींचकर मनुष्य की तरह पानी पीता है वह किसी दूसरे पशु पक्षी का मांस नहीं खाता। किन्तु जो पशु पक्षी चाटकर पानी पीता है वह पशु पक्षी का मांस खाता है। मनुष्य खींचकर पानी पीता है विवेक वाला है पर वह मांस खाता है तब तो वह जानवर से भी गिरा है। अगर किसी मां के बच्चे को काट दो तो उसकी मां को कितना दुःख होगा उसी तरह जानवरों को होगा। बाइबिल, कुरान, रामायण, रहोम किसी ने भी नहीं कहा पर आप इसे अपनी इन्द्रियों को उत्तेजित करने के लिये खाते है। आप को शराब की तरह विकारों की आदत हो गयी। तन्दुरुस्ती के लिये भगवान ने ऐसी ऐसी पुष्टिकारक चीजें बनायी पर हम उसे छोड़ आखाद्य वस्तुओं को खाते हैं जो हमारा अकल्याण करती है। अपनी इन्द्रियों को अपने बस में रखना है। ये सब बातें अध्यात्म विद्या से मिलेगी। ये सब बुरे आहारों का परित्याग जब तक नहीं होगा तब तक देश की दुःख तकलीफ नहीं जायेगी।

महात्मा फल दूध खाने को मना नहीं करते

महात्मा यह नहीं मना करते कि फल, दूध, मक्खन मत खाओ। महात्मा मुर्दों को खाने के लिये मना करते हैं। तुम जिसको काटोगे वह तुमको काटेगा महात्मा जब जब आये शिक्षा दी। कृष्ण भगवान ने मथुरा वासियों को मुहम्मद नेमुस्लमानों को, ईसामसीह ने इसाइयों को। अब राम, कृष्ण, ईसामसीह लौट कर नहीं आयेंगे। हम आप को सुना रहे हैं।

नाम सबमें है

इन्सानों को महात्माओं ने नाम, शब्द, वेदबानी, कलमा आवाज बताये। जहां जिस समय पर जैसा शब्द होता है उन्होंने वैसा ही नाम को बताया। वह नाम आप की रक्षा करेगा। सभी नर नारियों के दोनों आंखों के बीच में जीवात्मा है हर गन्दगी ने उसे ढक दिया। वह आवाज, नाम, कलमा सब में मौजूद है।

नाम ही हमारे शरीर की रक्षा करेगा। उस जीवात्मा का नाम के साथ गठबन्धन हो तभी उस जीवात्मा की रक्षा हो सकती है। हम अपने उस खजाने से बिलकुल अलग हैं। अगर महान आत्मायें मिल जांय तो जीवात्मा का हमेशा के लिये उद्धार हो जायेगा। ये शब्द सभी के अन्दर हो रहे हैं। हम बाहर के काम बाहर की इन्द्रियों से करेंगे। अन्दर की आवाज अन्दर की इन्द्रियों से सुनेंगे। नाम की महिमा से हम सभी बन्धनों से छुट जाते हैं।

इसकी महिमा और साधना करने से हमें सब कुछ मिलेगा। शब्द ही अंधकार को दूर करेगा। जब समय मिले शब्द का कमाई किया करो, सोकर, बैठकर लेटकर।

कृष्ण ने अपना रथ तैयार किया और

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर, सन ७०

कितना बड़ा विध्वन्स करवाया। उन्होंने उस संघर्ष में करोड़ों को खतम कर दिया। अन्त में उन्होंने अर्जुन को रथ से पहले उतरने को कहा। अर्जुन बोला-आप पहले उतरिये महाराज! कृष्ण बोले-मैंने तुम्हें कितना समझाया अर्जुन पर तुम्हारी समझ में नहीं आया। अर्जुन रथ से कूद पड़े इसके बाद कृष्ण नीचे कूद पड़े। उसी समय रथ में आग लग गई। अर्जुन ने इसके बारे में पूछा। कृष्ण ने कहा-अर्जुन तूने कोई कार्य नहीं किया ये सब "योग माया" ने किया। समय समय पर ऐसी शक्तियां जन्म लेती हैं जब लोगों को धर्म का ज्ञान नहीं रहता।

अन्दर का दृश्य

ज्योति सबमें जल रही है घास के पत्तों पर भी अगर बल्ब लगा दिया जाय तो भी भीतर के दृश्य की वह बराबरी नहीं कर सकता। इस वस्तु को प्राप्त करने के लिये शराब, मांस, मछली, नशीली वस्तुओं को छोड़ दो। इन्द्रियों का स्वाद जो हम लेते वह लालच बस लेते हैं।

जवानी में करो

आनन्द की खोज हम इस दुनियां में करते हैं किन्तु वह हमें नहीं मिलता। जब निराश हो जाते हैं तो सोचते हैं कि मरने के बाद मिलेगा। मरने के बाद कुछ भी नहीं मिलेगा। जिन महात्माओं ने स्वर्ग प्राप्त किया उन्होंने बताया। जवानी के जोश में ही सब कुछ करो। ये मत सोचो कि बुढ़ापे में भगवान मिलेगा। बचपन से ही जो उस रास्ते की ओर चल पड़ता है उसे भगवान शीघ्र मिल जाता है। मनुष्य यह सोचता है कि दश वर्ष बाद या मरने के बाद भगवान मिलेंगे पर जब वह मरन के पहले नहीं मिला तो मरने के बाद क्या मिलेगा। जवानी में जब तुम यह नहीं कर पाये तो बुढ़ापे में क्या करोगे? बुढ़ापे में सब जगह से बैठा दिये जाओगे।

धर्म और अधर्म

जिस काम को करने में भय लगे उसे ही अधर्म कहते हैं। उस काम को आप उसी वक्त छोड़ दो। जिस कर्म को करने में किसी बात का भय न हो उसे करें वह धर्म है। आप दोनों बातों को याद कर अपने अच्छे बुरे कर्मों को पता लगा सकते हैं। सारा का सारा खेल दुख सुख इत्यादि का इसी में है।

मन साथ दे तो काम बनेगा

मन क्या है? मुहम्मद साहब ने कहा मन एक शैतान है। मन अगर साथ दे तो जिवात्मा का छुटकारा हो सकता है। जो मन कहेगा वही होगा। कल्याण, मोक्ष, गति की बात इसके बिना एक स्वप्न है। मन एक शैतान है। मन इन्द्रियों के अधीन और भोग मन के अधीन। आप अपने मन को इन्द्रियों से हटायें। कृष्ण भगवान ने अर्जुन को समझाया मन हवा से भी तेज है। इसे महात्माओं के द्वारा वश में किया जा सकता है महात्माओं के उपदेश से यह मन ठीक होने लगता है। माया मोह छुटने लगता है और यह मन जीवात्मा का साथ देने लगती है अभी तो यह वैरी है।

सनातन ज्योति सबमें है

हमको पहले से अपनी आत्मा की रक्षा के लिये काम करना चाहिये। आत्मा को जगाना चाहिये, मानव मानव में यह सनातन ज्योति जल

Scanned by CamScanner

रही है। यहां की सारी रोशनियों को परमात्मा की रोशनी का एक प्रकाश छिपा लेगा तो उस रोशनी को देखो। आप नशीली वस्तुओं को त्याग दीजिये। यह केवल जिह्वा का स्वाद है। मछली भी अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये कांटे की गोली खाती है अन्त में जिह्वा स्वाद के कारण मारी जाती है। ऐसे कर्मों के द्वारा ही हम नरक में जाते हैं।

किसी की मदद से ही भगवान की प्राप्ति होगी

भगवान की प्राप्ति के लिये किसी की मदद नहीं लोगे तो कैसे उद्धार होगा। नर नारी सभी अपने जीवन में उस सुख को पा लो जिसे वैकुण्ठ स्वर्ग कहते हैं। जहां दुःख, दर्द, हड़ताल इत्यादि नहीं। हम दूसरे के मुल्क में आकर उसे अपना मान बैठे हैं, पर यह हो सकता है? इसके लिए अपने घर में जाओ तो सभी वेदनाओं से छूट जाओगे। यह तो सबसे खराब देश है, मृत्यु लोक है। इसे तो इसलिये अच्छा कहते हैं कि इसमें एक रास्ता है जिससे हम प्रभु के पास जा सकते हैं। नाम के महिमा से हम सभी बन्धनों से छूट जाते हैं। भगवान को जिसने पा लिया है। उन्हीं की सहायता से हम भी ईश्वर को पा सकते हैं। जिसने भी ईश्वर की प्राप्ति की एक दूसरे की सहायता से ही।

राजा जनक को जब ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा हुई तो उन्होंने बड़े बड़े विद्वानों को बुलाया तथा उनका बड़ा सत्कार किया। सबने अपने अपने तरीकों से ज्ञान प्राप्त करने को बताया किन्तु राजा को ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। कारण ये सभी विद्वान वाचक थे केवल। जिन्होंने स्वयं ईश्वर को नहीं साक्षात्कार किया था वह कैसे दूसरों को करा सकता है? अन्त में अष्टावक्र जी पहुँचे। सभी अपने को ब्रह्मर्षी विद्वान कहने वाले उनके टेढ़े शरीर को देखकर हंस पड़े।

अष्टावक्र बोले-राजा जनक आपने ये चमारों की सभा लगा रखी है। तुम वास्तव में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो इन चमारों से नहीं होगा? राजा जनक से अष्टावक्र ने पहले दक्षिणा मांगा। जनक ने सोचा ये सोना, चांदी इत्यादि मांगेंगे और क्या मांगेंगे। मेरे पास किसी चीज की कमी नहीं है। उन्होंने कहा आप कुछ भी मांग लीजिये।

अष्टावक्र ने कहा मुझे अपना तन मन दे दो। बाद में उन्होंने कहा यहां जितने जूते हैं सब एक चादर में बांधो। राजा जनक ने वैसा ही किया। अष्टावक्र ने पूछा आप कब तक ज्ञान प्राप्त करना चाहता हो? जनक ने कहा मैं शीघ्र से शीघ्र ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। अष्टावक्र ने एक घोड़ा मंगवाया और राजा जनक को चढ़ने को कहा। फिर दोनों चर्म आंखों को बन्द करने के लिये। फिर उन्हें भीतर देखने के लिये कहा। इस प्रकार राजा जनक का अहंकार दूर हुआ तथा उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। महान आत्मा के द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति होती है चाहे वे किसी भी भेष में हों।

बाहर के कान बाहर की आवाज ही सुनेंगे। अन्दर की आवाज अन्दर के कान को सुनाई देगा। किन्तु हमने कान को बन्द कर लिया। सबको दूसरे की मदद चाहिये। भगवान को पाने के लिए भी दूसरे की मदद चाहिये। जिन्होंने देखा सुना है वही देखा सुना सकता है। वहां न कोई दुःख है न हिन्दू मुसलमान है, न मन्दिर है न मस्जिद गिरजा है। अपने मुल्क वतन को छोड़कर हम दूसरे के वतन में बसना

चाहते है। इस शरीर को इसीलिये उत्तम कहा जाता है कि प्रभु की प्राप्ति इसी मानव शरीर में होता है। जो करता है वह पाता है। उसे अन्तः वाणी सुनने को मिलती है। इसमें पूजा हो रही है, घंटा बजता है। परमात्मा का दिव्य दर्शन सच्चे महात्माओं के द्वारा ही होता है।

स्वामी जी महराज के साथ

लखनऊ में आज चौथा दिन

आज दिनांक ७-७-७० है आज की सुबह बड़ा ही मौज लेकर आयी है। दयालु प्रभू का कुछ प्रेमी दर्शन पा लिये हैं और अभी बहुत से प्रेमी आ रहे हैं।

परम पूज्य स्वामी जी महराज ने कहा कि चलो थोड़ा सा मालिस हो जाय और इसके बाद मालिस के लिए कमरे में चले गये।

आज मालिस करते समय स्वामी जी महराज ने प्रारम्भ में अपने प्रभू के खोज के समय की कुछ घटनाओं को बतलाते हुये कहने लगे कि "बचपन में शक्तियां सोती रहती हैं वह स्वयं अचेत अवस्था में रहती हैं तथा उन पर माया का पर्दा रहता है। इसलिये उनके उस समय के दर्शन से कोई लाभ नहीं होता है। लाभ तो तब होता है जब शक्तियां जाग जाती हैं तथा अपने को पूरा जगा लेती हैं उसके बाद उनके दर्शन से लाभ होता है।

स्वामी जी महराज अपने अभ्यास काल की बात बताते हुय कहे कि एक बार मैं अमरनाथ जी का दर्शन करने के लिए गया कि कुछ लोग मुझसे यह बताए थे कि वहां पर शंकर भगवान का साक्षात दर्शन होता है मगर जब मैं वहां पहुँचा तो देखा कि लीला कुछ और ही है। मैंने देखा कि पर्वत की एक गुफा है जिसमें थोड़ा सा बीच में छिद्र है, इसी छिद्र से बर्फ थोड़ी थोड़ी गिरती है और वह धीरे धीरे शिवलिंग के स्वरूप में हो जाती है।

यह मनुष्य अपनी मूढ़ता बस उसी शिवलिंग को मत्था टेकता है। तथा भगवान मान कर पूजते हैं। दुनियां के लोग बेवकूफ हैं क्या बताया जाय। जहां परमात्मा मिलता है उसको तो लोग ढोंग समझते हैं और जो वास्तव में ढोंग है उसे ही भगवान मान कर नाना प्रकार की यातनाएं सहते हैं ये भोले भाले जीव संसार जाल में इतने फंस जाते हैं कि क्या वास्तविक है क्या अवास्तविक है इसका भी पता कहीं चलता है। अमर नाथ का दर्शन कर जब मैं लौट रहा था तो देखा कि चार बाबा लोग एक टीले पर बैठ कर खूब चरस पी रहे हैं—एक ने मुझे बुलाया आओ ले लो—मैंने कहा कि मैं तो यह सब नहीं

Scanned by CamScanner

पीता खाता हूँ। इतने में देखा कि एक बाबा ने इतनी तेजी में चिलम की कश खींचा की उसके साथ ही साथ उसकी दम भी निकल गयी। मैंने उन लोगों से कहा कि वह देखो—आप लोग अभी होड़ में लगे हो और वे बाबा जी ठंडे हो गये। यह देख वह सब हक्का बक्का रह गये और मैं भी चल दिया।

इसके बाद स्वामी जी महराज ने कहा बताओ उसकी क्या दशा होगी—। पुनः थोड़ी देर के बाद बताए कि ऐसे ही एक बार "मैं गुजरात के गिरनार पर्वत पर एक मंदिर है वहां भी गया हुआ था यह रास्ता बड़ा ही बिहड़ है तथा रास्ते में कहीं भी पानी की उचित व्यवस्था नहीं है बहुत से लोग वहां प्यासे ही मर जाते हैं। मैं भी पैदल ही गया था तथा दो बुढ़िया भी पैदल ही गयी थी लौटते समय यह सब मुझे रास्ते में मिली।

मैंने देखा कि एक बुढ़िया बेहोश पड़ी है। दूसरी बैठी हुई बूढ़ी ने पानी मांगा मैंने अपने कमण्डल से पानी निकाल कर उसके मुंह पर छींटा मारा और वह थोड़ा पानी पी भी। इतने में वह होश में आ गई और बाद में आकर पांव पड़ने लगी। उसने कहा कि "हे महराज जी आप तो भगवान हो, आप ही ने मेरी जान बचाई है। मैं आप को अब नहीं जाने दूँगी—आप हमारे घर चलिए।" इत्यादि बाते कहते हुए नाना प्रकार का प्रलोभन दिखाते हुए—अजीब सी लीला प्रस्तुत की।

इतने में मैंने (स्वामी जी महराज) कहा कि मैं तो खुद अभी खोज में निकला हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है—लेकिन बुढ़ी माने नहीं—बड़ी मुश्किल कर दी। मैंने कहा मुझे जाने दो—मेरे से अभी कुछ हासिल नहीं होगा—बड़ी मुश्किल से जान बचाई—और वहां से बच निकला—नहीं तो वह आने नहीं देती।"

उपरोक्त घटना जो स्वामी जी महराज ने स्वयं बताया—बहुत पहले की है जब कि दयालु प्रभू साधना कर रहे थे—इसका निश्चित समय का पता नही लग सका—यह घटना स्पष्ट कर रही है कि दयालु प्रभू की अन्तर झलक पहले भी किसी-किसी को मिली परन्तु उसे स्वयं उन्होंने भुलवा देने की प्रेरणा भी भर दिए—हालां कि वह जिन्दगी भर उसको याद करती रही कितनी भाग्य शाली रही वह।

आज ही स्वामी जी महराज आर्य नगर से चल कर बिमला के नवजात शिशु को अपना दर्शन लाभ पहुँचाने के लिए महा नगर स्थित फातिमा चिकित्सालय में आये हैं। इस समय स्वामी जी महराज के साथ करीब १३ प्रेमी हैं तथा दोनों गाड़ियां साथ हैं सब के सब नई वाली आकर्षक टोपी को लगाये हुए हैं। टोपी में ऐसी चुम्बक शक्ति प्रतीत हो रही है कि सबकी दृष्टि को अपनी ओर खींच रहे हैं। अस्पताल के तमाम कर्मचारी इधर को देखने लगे तथा कालोनी के रहने वाले जन अपनी छतों पर चढ़ कर, खिड़कियों से, तथा सड़क पर आकर प्रेमियों की ओर बड़ी ही चालाकी से देख रहे हैं।

परन्तु स्वामी जी महराज बड़े ही मौज में शिमला वाली छड़ी लिए हुए अस्पताल की ओर बढ़ते जा रहे हैं। जब स्वामी जी महराज अस्पताल के अन्दर वार्ड में चले गये तो सभी बहुत ही शान्त हो गये हैं और डाक्टर लोग बाहर बरामदे में खड़े होकर चुपचाप प्रेमियों की ओर देख रहे हैं इतने में बड़ी हिम्मत करके एक प्रेमी ने सी० आई० डी० इन्सपेक्टर श्री सत्यनारायण चौबे से पूछा कि "क्या आप लोग

Scanned by CamScanner

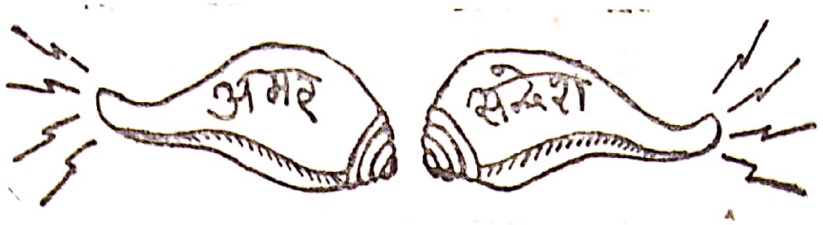

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर, सन् ७०

अमेरिका से आये हैं।

इस प्रकार जब चौबे जी ने उनको समझाया तो वे सब स्वामी जी महराज को प्रणाम किए इतमें में स्वामी जी महराज निकले और गाड़ी में बैठ कर चल दिये और माडल हाउस आ गये। आज दि० ८-७-७० है-आज भी स्वामी जी महराज प्रतिदिन की तरह से रायल होटल, हजरतगंज-होते हुए-आये-और रायल होटल पर उदितनारायन शर्मा का पता लगाये-नहीं मिले तो-पी०एम०जी० से आगे स्टेडियम के पास में आ कर रुके-आज की सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि स्वामी जी महराज यहां उतर कर बड़े ही मौज में टहलने लगे उसके बाद एक दूकान से कुर्सी मंगाये और बैठ गये-रिक्से वालों के दुख द्वन्द को सुनते हुए तथा उन्हें यह कहते हुए कि मांस मछली मत खाना शराब मत पीना और उस परमात्मा पर भरोसा रखना वही तुम लोगों की तकलीफ को दूर करेगा। आदि बात बताते हुए कहे कि सिनेमा भी मत देखना-इसी सिलसिले में दयालु प्रभू ने कहा कि सिनेमा ने देश का जर्जर कर दिया। आगे वह समय आने वाला है जब कि एक ही रात में देश के सारे सिनेमा घर बन्द हो जायेंगे। ऐसी महत्व पूर्ण बातों को बताते हुए स्वामी जी महराज अब चलने के लिए खड़े हो गये हैं-'

दिनांक ९-७-७० है-आज दयालु प्रभू सुबह ही प्रेमियों को दर्शन दे चुके हैं और अब चौबे जी, सच्चिदानन्द जी, सीताराम जी नन्दू जी और बाबा जी तथा मैनेजर साहब आदि प्रेमियों के बीच में दिल्ली सतसंग की चर्चा कर रहे हैं। तथा लखनऊ में आने वाले परिक्रमा यात्रियों के लिये किस प्रकार की व्यवस्था होगी उसकी पूरी योजना को समझा रहे है। स्वामी जी महराज कहे कि चौबे जी गोरखपुर से गाजियाबाद तक ५ लाख तथा दिल्ली शहर में ५ लाख पम्फलेट तथा १० हजार कार्ड बांटे जायेंगे। और अलग-अलग गांवों व शहरों के पर्चे अलग बांटे जायेंगे जिसको इसमें नहीं लिया गया है। हर प्रेमी अपने स्थान पर पर्चे बांटेंगे। देखें धर्म का प्रचार कैसे नहीं होता है—शक्तियां अपना कार्य समय आने पर करती हैं क्यों बाबा? समझे देखें धर्म का प्रचार कैसे नहीं होता है। अभी तो हजरतगंज और अमीनाबाद की सड़क केवल तीन आदमियों की टोपी को देख कर खचाखच भर गयी और ट्राफिक जाम हो गया सारे के सारे लोगों में कूतूहल मच गया तो जब ५० या ६० हजार लोगों को टोपी लगाये देखेंगे तो पता नहीं इनकी क्या दशा होगी।" यह कहते हुए परम पिता जी ने कहा कि अब मैं आज अभी गोरखपुर के लिए रवाना हो जाऊंगा आप सभी लोग अपनी पूरी तैयारी कर लेना आप लो। गुरुपूर्णिमा में भी आना महत्वपूर्ण सतसंग होगा।

इसके बाद भोजनों परान्त स्वामी जी महराज लखनऊ से १०-१५ पर प्रेमियों के प्रणाम स्वीकार करते हुए बड़ी वाली गाड़ी में सवार हो चल दिये (स्वामी जी महराज बाराबंकी में) लखनऊ से चल कर स्वामी जी महराज सीधे बाराबंकी आये और आज इस नगरी की भी भाग्य जगी है साक्षात प्रभू का दर्शन घर बैठे सुलभ हुआ है वैसे तो लोगों को मन्दिरों में स्वयं जाना पड़ता है जहां कुछ भी नहीं मिलता है परन्तु यहां उलटी ही रीति है दयालु दाता स्वयं ही दीनों की कुटिया में जा जाकर दर्शन दे रहे हैं और अपनी अमर वाणी द्वारा अमर सन्देश को सुना रहे हैं।

परम पूज्य स्वामी जी महराज श्री रामेश्वर प्रसाद जी के यहां आये है। यह अपने प्रेमी हैं। स्वामी जी महाराज को देख कर बाराबंकी की

Scanned by CamScanner

जनता टूट पड़ी। पण्डित और हलवाई सब के सब दौड़ पड़े तथा सभी ने आग्रह किया कि स्वामी जी महराज आज यहां सतसंग कर दिया जाय। सब कह रहे हैं कि सारी व्यवस्था हम करेंगे।

सम्बाददाता महोदय नजरबन्दी के शिकार

प्रेमियों से सतसंग की वार्ता चल ही रही थी कि हिन्दुस्तान पेपर के सम्बाददाता लालदेव से बहस में हार खाने के बाद सीधे स्वामी जी महराज के पास पहुँचे और भरी सभा में जहां स्वामी जी महराज बैठे हैं सबको धक्का देते हुए सबसे आगे जा बैठे। बैठते ही अभी श्रम-बिन्दु चेहरे से टपक ही रहे हैं कि प्रश्नों की बौछार उन्होंने उठायी-सबका उत्तर स्वामी जी महराज स्वयं दे रहे हैं-पहले तो तमाम अनाप सनाप बक गये। इतने पर भी जब उनसे नहीं रह गया तो उन्होंने कहा कि स्वामी जो महराज "मैंने कल आपको चार सौ आदमियों के साथ हजरतगंज में प्रचार करते हुए देखा जो एक विशेष प्रकार की टोपी लगाये हुए थे इस पर स्वामी जी महराज बहुत तेज हंसे ४ आदमी और कहे कि यह देखो कल तो चौरासी दिखाई पड़े मेरे साथ केवल चार आदमी थे और आज भी यहां केवल ४ आदमी हैं क्या मैंने ४०० आदमी किराये के बुला लिए थे। जब कि कोई भी सांसारिक आदमी को १० रु० दिए जांए कि यह टोपी सिर पर रख लो तो वह सिर पर नहीं रक्खेगा।

इस पर सम्वाददाता महोदय ने कहा कि आप महराज हमारी आंख में धूल नहीं झोंक सकते हैं मैंने अपनी आंख से देखा है। वह बात गलत नहीं हो सकती है।

स्वामी जी महराज ने कहा कि यह आप का दोष नहीं है-ऐसे ही एक राम-रावण को हजार राम दिखाई दिये।

यह है उस प्रभू की लीला। अभी तो ४ आदमी ४०० के रुप में दिखाई दे रहे हैं। तो ५०-६० हजार आदमी कितने दिखाई देंगे।

इस पर सम्बाददाता महोदय ने पूछा कि स्वामी जी महराज। आप शायद यह भी कहते हैं कि मेरा कोई भी कार्यक्रम समाचार पत्रों में न छापा जाय। क्या यह सत्य है इसमें आप की क्या राय है।

स्वामी जी महराज ने कहा यह सत्य है और उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। आप हजतरगंज में ४ सौ आदमी देखे। जिसमें केवल ४ आदमी थे। और मेरे कहने पर भी विश्वास नहीं। तो मैं ऐसे समाचार नहीं छपवाना चाहता हूँ। जिसमें सत्यता कुछ न हो और असत्यता की भरमार हो। ये असत्य में सत्य का समावेश नहीं चाहता हूँ। इसलिए समाचार पत्रों में मेरा कोई कार्यक्रम छपवाने का विचार नहीं है।

जब कि आज ये समाचार पत्रों में "बकरी की टांग टूट गयी" "वहां चोरी हो गयी।" "वहां चाकू मारा" ऐसे समाचार से ही पूरा अखबार भरा रहता है। मगर इस धर्म का प्रचार इतने दिनों से चल रहा है। कहीं समाचार पत्रों में छपा मगर आज तक नहीं छपा और इसकी रुप रेखा इस प्रकार भी हो गयी तो मुझे अपने पर विश्वास है कि भारत में धर्म का प्रचार हो कर रहेगा। इसे कोई रोक नहीं सकता और इसमें आप लोगों की मुझे कोई आवश्यकता नहीं। सम्बाददाता महोदय का मुंह लटक गया

Scanned by CamScanner

और चुप चाप उठे चल दिये।

नगर वासी यह सुन कर बहुत ही प्रभावित हुए और कहने लगे कि महाराज जी बिलकुल ठीक कह रहे हैं। सब के सब प्रभु के अमृत बचनों के प्यासे हैं और चाह रहे हैं कि अब इसी प्रकार से दर्शन ही करता रहूँ सब आनन्द में झूम रहे हैं।

स्वामी जी महाराज उठे और कहे कि अब मैं चलूंगा। बहुत व्यस्त कार्यक्रम में हूँ परिक्रमा में आप लोग शामिल हों और जो शामिल न हो सकें उनका दर्शन करें। इसके बाद स्वामी जी महराज ऊपर चले गये।

थोड़ी देर के बाद स्वामी जी महराज आये और जीप में बैठकर चल दिये। बाराबंकी के करीब १ मील की दूरी पर आकर किसान कोल्ड स्टोरेज के सामने सड़क पर ही रुके रहे। यहीं पर सभी लोगों ने परम पिता के आदेशानुसार प्रसाद लिया और इतनी ही देर में किसान कोल्ड स्टोरेज के इन्जीनियर श्री बाजपेयी जी की धर्म पत्नी और उनका लड़का, मालिक के इशारे को पा दौड़े आये और सरकार के चरणों में पड़ गये। इतने में दयालु प्रभू ने उन प्रेमियों से बड़े ही मौज में बातें करने लगे तथा उनको सोत प्रसाद भी दिये यह कहते हुए कि इसको तुम खा लेना। प्रसाद के बहाने प्रभू ने उन्हें क्या दिया वही जाने। चलते समय उसने यह भी कहलवाया कि महराज जी ऐसे ही आयें गे तो फिर दर्शन देने की कृपा करियेगा।

इसके बाद यहां से परम पूज्य स्वामी जी महराज चल दिए। इस प्रकार से स्वामी जी महराज ३ घण्टे तक बाराबंकी में रुके। इतने ही देर में लोगों में क्या भर दिया प्रभू ने इसका वर्णन ही कैसे कर सकूं। लेकिन इतना जरूर है सबके सब ओत-प्रोत हैं बिह्वल हैं। दयालु प्रभू के एक इशारे पर नाचने के लिए तैयार हैं। परिक्रमा की बात सुन कर तथा १२०० मील की साइकिल यात्रा से सभी हैरत में है यह क्या होने वाला है देश में ऐसा कभी नहीं सुना गया है। यह पहली बार और अपने ढंग का अनोखा है।

स्वामी जी महराज फैजाबाद में

बिना किसी पूर्व सूचना के हर प्रेमियों को दर्शन का लाभ पहुँचाते हुए, जैसे अन्य नगरों में परमपिता जी पधारें हैं ठीक उसी प्रकार से यहां के प्रेमियों को भी लाभ पहुँचा रहे हैं।

इस यात्रा में स्वामी जी महाराज हर कस्बों व नगरों में एक विशेष और नये जीव को पकड़ते चले आ रहे हैं। उन्हीं में से एक सेठ भगवान दास जी भी हैं। सेठ जी बड़े ही भाग्यशाली हैं जिनके यहां स्वामी जी पहली बार रुके हैं। सेठ जी बड़े ही साहसी हैं और प्रभू को पाय अपने को फूले नहीं समा रहे हैं।

स्वामी जी महाराज यहां बहुत थोड़ी ही देर रुके और दिल्ली की सारी व्यवस्था बता कर सेठ पोपटमल आदि कई प्रेमियों को समझा रहे हैं।

फैजाबाद में भी टोपी कौतूहल का कारण बन गई है जो भी यहां आ रहे हैं वही टोपी पर नाना प्रकार के प्रश्न करते हैं और अपना उत्तर पा चुप चाप चले जाते हैं। १२०० मील लम्बी परिक्रमा की कहानी सुन कर सभी हैरत में पड़ जाते हैं। कुछ तो यही कहते हैं कि जयगुरुदेव जी तो यार देश में तहलका मचा दिए हैं। जिस ही शहर में जाओ उसी शहर में जयगुरुदेव की ही चर्चा चल रही है। अब तो सभी सरकार की खबर सुनने के बजाय 'जयगुरुदेव' की ही खबर सुनने में

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर, सन ७०

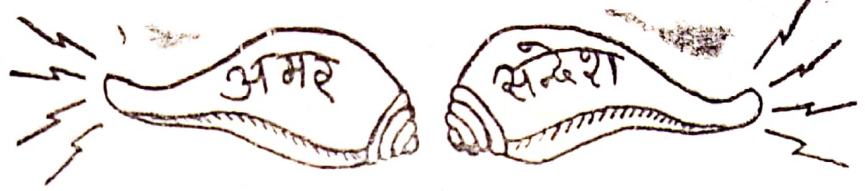

लग रहे हैं। मालूम होता है कि देश में-'जयगुरुदेव जी' कोई करामात जरूर करेंगे।

दूसरे साथी ने कहा कि हां भाई। सन ७२, ७२ चिल्लाते हैं यह समझ में नहीं आता कि सन ७२ में क्या होगा। कहते हैं कि राजनीति में भाग मत लो और सन् ७२ की भी बात करते हैं। कुछ मामला समझ में नहीं आ रहा है। क्या अब राज इन्हीं का है होगा, क्या ?

दूसरे ने कहा-नहीं यार राज्य लेना इतना आसान नहीं है।

फिर उसने कहा-अरे भाई मुश्किल ही क्या है। जब देश की बहुत जनता उनके पास हो जायेगी और बहुमत उनका हो जाएगा तो राज्य भी उनका ही हो जाएगा इत्यादि प्रकार की बाते दोनों किनारे पर खड़े हो कर, कर रहे हैं।

इतने में-दूसरे ने कहा-चलो भाई तुम तो ऐसे ही बेकार की बातों में फंस जाते हो।

उसके साथी ने कहा चलो भाई। इतने ही देर में स्वामी जी महराज आते हुए दिखाई दिए और वह लड़का दौड़कर आया और स्वामी जी महराज को झुक कर प्रणाम किया। स्वामी जी महराज गाड़ी में बैठ गए और सीधे गोण्डा के लिए रवाना हो गये।

यहां से चल कर स्वामी जी महराज दोनों गाड़ियों के साथ ६-३० पर सिन्हा इक्साइज इन्सपेक्टर के घर पहुँचे और कुछ आवश्यक बातें करने के बाद करीब ११ बजे विश्राम करने लगे।

स्वामी जी का अथक परिश्रम

आंखों देखा वर्णन एक प्रेमी की कलम से

राजस्थान के दौरे के बाद राजधानी जयपुर में होली सतसंग के बाद स्वामी जी महराज सीधे आश्रम पर आये। साथ ही साथ गोरखपुर के प्रेमी भी आश्रम पर आये। २६ मार्च से ही दयालु प्रभू पुनः आश्रम के कार्य में जुट गये और तूफान की तरह से २ दिन के अन्दर ३६ बीघे खेत का पूरा सरसों निकाल कर एक स्थान पर रख दिया गया।

स्वामी जी महराज का हर कार्य तूफानी होता है। अभी गेहूँ कटने में देर है। स्वामी जी महराज ने कहा कि चलें एक दौरा पूर्वी जिलों का लगा आवें और ठीक ३० मार्च को आश्रम से तूफानी दौरा प्रारम्भ हुआ जो देश के निम्न नगरों में हुआ। मथुरा से इलाहाबाद, वाराणसी, कलकत्ता, टाटा नगर, सोनपुर, देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, गोण्डा, लखनऊ और कानपुर होते हुए १० अप्रेल को आश्रम पर स्वामी जी महराज पहुँच गये।

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर सन् ७०

१० अप्रेल से गेहूँ की कटाई प्रारम्भ हो गई और २५ अप्रेल तक ३६ बीघे का सारा गेहूँ काट कर और भूसा तथा अनाज सब रख कर पूरा काम समाप्त कर लिया गया। इसके बाद मेजर ड्राइवर दिल्ली चले गये और स्वामी जी महराज अपने इन्दौर सतसंग की तैयारी में लग गये। जब भी स्वामी जी महराज बैठें तो यही कहते कि "अच्छा हुआ सब काम जल्दी से सलट गया नहीं तो कहीं आंधी पानी आता तो बहुत परेशानी होती। इसका क्या ठिकाना।"

अब स्वामी जी महराज इन्दौर सतसंग की ही चर्चा कर रहे हैं। इधर भगवानदीन ड्राईवर घर जाने के लिए तैयार हैं। और मेजर ड्राईवर दिल्ली चले गये हैं। स्वामी जी महराज ने भगवानदीन से कहा कि तुम मुझे इन्दौर पहुँचा दो इसके बाद घर चले जाना। बड़ी मुश्किल से इन्दौर जाने को तैयार हुए। भगवानदीन को अगर कोई कुछ समझावे तो यही कहते कि नहीं भाई मैं अब घर जाऊंगा कुछ काम धाम करूंगा। साथ ही साथ साधन भजन भी कुछ नहीं कर पाता हूँ यही बात स्वामी जी महाराज से भी उन्होंने कहा। इस पर दयालु प्रभू ने कहा साधन-भजन जो कुछ है वह मेरा ही काम है। अगर मैंने तुम्हें किसी काम में लगा दिया तो समझो कि यह भी साधन भजन ही है। साथ ही साथ दयासागर ने यह भी कहा कि साधन-भजन जो कुछ भी करते वह मेरे धाम तक पहुँचने के लिए ही "चलो मैंने तुमको अपना धाम दे दिया।

परन्तु काल का चक्र क्या नहीं करता है। भगवानदीन के मन में उपरोक्त एक भी बात न आई और मनमुखी ढंग से बर्ताव कर के यही कहते रहे कि अब मैं घर पर जाऊंगा।

"मूरख हृदय न चेत,
जो गुरु मिलहि विरंच सम"

परम दयालु प्रभू ने भगवान दीन को बहुत प्रकार से समझाया परन्तु उनके हृदय का भूत नहीं भागा और अपने वचन पर आरूढ़ रहे।

यही नहीं जो आज तक किसी को प्राप्त ही नहीं हो सका वह दयासागर परम पूज्य स्वामी जी महाराज ने इस समय भगवान दीन ड्राइवर को दिया परन्तु उनका उत्तर नकारात्मक ही रहा जिसके लिए आज लाखों नर नारी तन मन धन से लगे हुए हैं उसे दयालु प्रभू ने भगवान दीन को यों ही दे दिया। दयालु प्रभू अपने भक्तों को आज सब कुछ देने को तैयार हैं और दे भी रहे हैं परन्तु हम मनमुखी जीव काल वशीभूत हो कुछ लेने से वंचित हैं। स्वामी जी महाराज ने कहा कि मेजर जब आ जांय तो आप चले जाना। इस प्रकार से बहुत मुश्किल से इन्दौर तक जाने के लिए तैयार हुए।

आज दिनांक २-५-७० है और स्वामी जी महाराज इन्दौर सतसंग में चलने की पूरी तैयारी कर चुके हैं। स्वामी जी महाराज ने कहा कि तुम लोग भी तैयार हो जाओ आज रात्रि में किसी भी समय चल दूंगा। सभी लोग तैयार होने लगे इस यात्रा में स्वामी जी महाराज के साथ श्री काली प्रसाद तिवारी, झुड़िया, सीकर के चन्द्रस्वरूप माथुर, सच्चिदानन्द भट्ट गोरखपुर तथा भगवान दीन, गोरखपुर के हैं। २-५-७० का दिन इस प्रकार से समाप्त हुआ।

परम पूज्य स्वामी जी महराज आश्रम के शेष कार्य को समझा रहे हैं और इस यात्रा में बड़ा ही लम्बा प्रोग्राम बनाये हुये हैं। यहां से चल कर इन्दौर अहमदाबाद, ऊना, सूरत तथा

Scanned by CamScanner

गुजरात के कई शहरों में सतसंग करते हुए राजस्थान से होते हुए लौटने का है।

इस समय रात्रि के ३ बज चुके हैं स्वामी जी महराज तैयार हो चुके हैं। सभी साथ चलने वाले भी तैयार हो गये हैं। दयालु प्रभू सबसे मिल जुल रहे हैं। और ३-४० मि० पर स्वामी जी महराज पुराने आश्रम से चलकर बारह बीघा पहुँचे। स्वामी जी महराज अपनी फीएट कार में हैं और हम लोग जीप पर हैं। यहां पर स्वामी जी महराज के दर्शन करने के लिए त्रिवेनी और ठाकुर साहब दोनों जने सड़क पर पहले ही से खड़े हैं। प्रभू के दर्शन पाकर बड़े ही प्रसन्न हैं। साथ ही स्वामी जी महराज उन्हे आगे का काम समझा रहे हैं।

यहां से चलकर स्वामी जी महराज आगरा पहुँचे और पेट्रोल लेकर आगे बढ़े यहां से चल कर राजस्थान के धौलपुर शहर से होते हुए ग्वालियर पहुँचे। ग्वालियर में भी पेट्रोल लिया गया और यहां से ३ मील अभी आगे चले थे कि एक मंदिर के पास में फीएट गाड़ी खराब हो गयी। यहां पर स्वामी जी महराज १० बजे से २ बजे तक ४ घन्टे रुके रहे।

स्वामी जी महराज मंदिर पर बैठे हुए एक बूढ़े बाबा के पास चले गये और उनसे नाना प्रकार की बात घण्टों तक करते रहे।

स्वामी जी महाराज ने बूढ़े बाबा से पूछा। क्यों भगत यह मंदिर किनका है?

बूढ़े ने उत्तर दिया। यह एक राजा साहब के नाम पर मंदिर है उनके छोटे भाई ने राजा का सिर यहीं पर काट दिया था। राजा बड़े ही भक्त थे।

स्वामी जी ने कहा। इसी पर यह मन्दिर बन गया। पूजा आप ही करते हो। बूढ़े ने उत्तर दिया हां महराज जी!

स्वामी जी ने कहा कि पहले के समय से आज का समय तो अच्छा है।

इस समय पर बूढ़े ने कहा कि "पूछो मत महराज आप तो राजा आदमी हो। आप को क्या मालूम? लेकिन पहले के समय से आज का समय बहुत खराब आ गया है। पहले तो दो आने मजदूरी मिलती थी तो सारा परिवार भर पेट भोजन कर लेता था। और आज ४ रु० मिलता है परन्तु किसी का पेट नहीं भरता। यह कागज का नोट गिनने के लिए है। गिन के भले ही पेट भर सकता है। लेकिन पेट भोजन से नहीं भर सकता है।

फिर स्वामी जी महराज ने पूछा कि राजाओं के समय से तो आज का समय अच्छा हो है। सभी लोग अब स्वतंत्र हो गये हैं। सब का राज है।

इस पर बूढ़े ने कहा नहीं महाराज पहले का समय हर हालत में अच्छा था। पहले तो राजा लोग प्रजा की बात को सुनते थे। पहले गरीबों पर लोग दया करते थे। सभी प्रकार के लोग खुशहाल रहते थे। आज क्या है वोट लेने के लिए नेता लोग ५ साल में एक बार दिखाई देते हैं जैसे बर्षाती मेढक वर्षा में टर्र-टर्र चिल्लाते हैं वैसे ही वे भी चार दिन के लिए चिल्लाते हैं कि गरीबों के लिए यह करेंगे वह करेंगे। जीत गये फिर भूल गये। उसके बाद कौन किसको पूछता है सब अपनी अपनी गाते हैं और गरीबों पर नाना प्रकार के टैक्स लगाते हैं कोई गरीब आदमी अपनी कमाई भी नहीं खाने पाते।

अरे महराज जी, टैक्स की तो आज भरमार हो गई है। अब तो बात पर भी टैक्स लगने लगा। आज तो कोई गरीब आदमी अपनी बात कुछ कहना चाहता है तो उस पर

Scanned by CamScanner

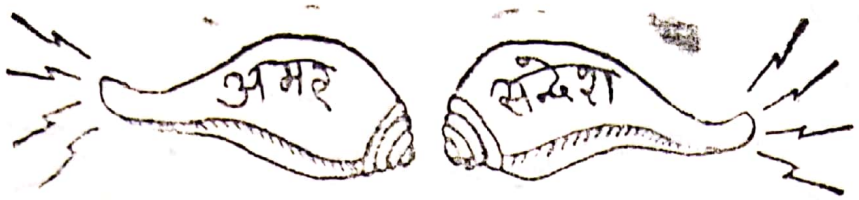

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर सन् ७०

टिकट लगाये तब तो सुना जायेगा नहीं तो कोई सुनने वाला ही नहीं है।

सभी चोरों का राज हो गया है। सब अपना पेट भरने वाले हैं। पता नहीं कितना बड़ा पेट उनका है। सारी दुनियां का धन वही अकेले रख लेना चाहते हैं। क्या चलेगा राज पाट महराज जी, आज तो सब एसम्बली में ही मार करते हैं। जब अभी तक उनका झगड़ा नहीं खतम हुआ तो वह राज-पाट क्या चलाएंगे सभी एक दूसरे की कमियों को ही देखते हैं तथा एक दूसरे को गिराने के लिए तैयार रहता है। यही है आज की स्वतत्रंता। यही है अपना राज। आज गरीबों की सुनने वाला भगवान के सिवाय कोई नहीं है। जमीदारी थी तो लोग कर्जा भी पा जाते थे और मजदूरी करके पाट देते थे। आज गरीबों को कोई कर्ज भी देने वाला नहीं है। अगर १० रु० कोई देता है तो २० रु० सूद का लेता है। यह है हमारे स्वतंत्र भारत की हालत। यही नहीं स्वतंत्रता ने और आज की पढ़ाई ने तो देश को बरबाद कर दिया। आज पढ़ पढ़ के लड़के माता पिता से बोलना बन्द कर दे रहे हैं। सेवा करने को कौन कहें सभी अपने कमाने खाने में लगे हैं। क्या था भारत का आदर्श सबमें सेवा भाव था मातृ भक्ति, पितृ भक्ति गुरु भक्ति थी। परन्तु आज ठीक उलटे ही हो रहा है। औरतों की स्वतंत्रता तो सिर दर्द हो गयी है। सिर खोल बिना किसी शर्म के बाजारों में धकाधक चली जा रही हैं। अपने ही जाकर पूरा बाजार कर ला रही हैं। बच्चे को पति देव जी ढोते हैं और अपने दोनों हाथ भांजते आगे-आगे चली जाती हैं। यह है स्वतंत्रता।

स्वामी जी महराज ने पुनः पूछा कि अच्छा तो बताओ भगत जी "आगे का कैसा समय आने वाला है।"

बूढ़े बाबा ने कहा महाराज आप तो बड़े आदमी हो। पढ़े लिखे हो। आप तो सब जानते हो मेरी उमर ८२ वर्ष की हुई लेकिन जैसा मैं देखता आ रहा हूँ उसके अनुसार तो "आगे आने वाली दुनियां बिलकुल उलट जाएगी। सब के सब रसातल में चले जाएंगे। सारी दुनियां धंस जाएगी। बिलकुल प्रलय हो जाएगा। मुझे तो ऐसा ही लगता है।" आजकल बहुत अत्याचार बढ़ गया है और दिन बदिन बढ़ता ही जा रहा है। जब अत्याचार बढ़ता है तो दुनियां का प्रलय हो जाता है। वैसे जो भगवान करता है वही होता है लेकिन मेरा ऐसा अनुमान है।

स्वामी जी महाराज ने इस पर कहा कि बात ठीक कहते हो।

इसके बाद स्वामी जी महाराज यहीं पर भोजन किए और हम लोगों को भी प्रसाद दिए तथा थोड़ी देर के लिए एक पतली सी बेन्च पर तौलिया बिछा कर आराम किए।

भगवानदीन अब गाड़ी को ठीक कर चुके हैं और चलने के लिए तैयार हैं। अब दो बजने वाले हैं। स्वामी जी महाराज उठे और कहने लगे कि गाड़ी फिट हो गयी। तो अब चला जाय और यह कहते हुए यहां से दो बजे चल दिए। ग्वालियर से चल कर स्वामी जी महाराज ३-१५ बजे गूना पहुँचे ग्वालियर से गूना की दूरी ८० मील है।

गूना पहुँच कर स्वामी जी महाराज की गाड़ी पुनः खराब हो गयी और उसको ठीक किया जाने लगा।

स्वामी जी महाराज कहे चलो थोड़ा गूना टहल लें। और चौराहे तक गये परन्तु वहां से लौट आए।

यहां पर गाड़ी को बनाने में ३ घण्टे के करीब लग गये और यहां रात्रि हो गई। स्वामी

Scanned by CamScanner

अमर संदेश

जी महराज ने कहा कि आगे का रास्ता ठीक नहीं है और मैं कुछ थक भी गया हूँ। आज यहीं विश्राम किया जाय और सुबह पुनः यहां से ४ बजे चला जायेगा इस प्रकार से यहां बातचीत करते हुए थोड़ी देर के लिए सब लोग आराम करने लगे। भोर में ३॥ बजे स्वामी जी महराज उठे और चलने के लिए तैयार होने लगे।

आज दिनाक ४-५-७० है। सुबह के ४ बजे हैं। गूना से इन्दौर की दूरी १७५ मील है। साथ ही आज ही इन्दौर में पहुँचना है और वहां पर आज सायंकाल ६-३० बजे से सतसंग है।

स्वामी जी महाराज भगवानदीन से कहे कि थोड़ा तेजी से आओ। आज ही इन्दौर का सतसंग है। वहां जल्दी से पहुँचना है। चलो आगे कहीं स्नान भी कर लिया जायेगा। इस प्रकार से बड़ी ही तेजी से स्वामी जी महाराज चले। आगे चलकर करीब गूना से ८० मील की दूरी पर एक नदी कालसिन है जिसमें स्वामी महाराज ने स्नान किया। आज बड़ी ही निराली मौज है। स्वामी जी महाराज ने कहा देखो चन्दर यह नदी बहुत ही अच्छी है ऐसा पानी कहीं मिलेगा नहीं। चलो इसी में स्नान करेंगें। चन्दर तुम भी यहीं नहा लो। चन्दर से कहे कि भट्ट वगैरह को भी कह दो कि यहीं आकर स्नान कर लें। हम लोगों ने बड़ी भाग्य समझा और तुरन्त स्नान करने के लिए चल दिए।

कालसीन एक पहाड़ी नदी है। जो मध्य प्रदेश की बड़ी ही प्रसिद्ध नदी है। इसमें पानी बहुत ही कम रहता है। नदी के नीचे में केवल पत्थर ही पत्थर है।

स्वामी जी महराज पत्थर के एक टीले पर बैठ कर स्नान कर रहे हैं। लोटे से ले लेकर डाल रहे हैं। बड़ा ही अच्छा लग रहा है। सारे लोग जो शहर के रहने वाले हैं। स्वामी जी महराज को ही देख रहे हैं। एक टक होकर देख रहे हैं। और स्वामी जी महराज बड़े ही मौज में स्नान कर रहे हैं।

स्वामी जी महराज ने हम लोगों से कहा कि तुम लोग उधर नहा लो। जिधर में नदी का पानी बह कर जा रहा था। हम लोगों ने स्नान किया। स्वामी जी महाराज कन्धे पर धोती रखे तौलिया लगाये और खड़ाऊं पहने तथा हाथ में कमन्डल लिए चले आ रहे हैं। जटा खुली है। सिर पर वस्त्र नहीं धरे हैं। पूरा एक मस्त फकीर का वेष इस समय स्वामी जी महाराज का लग रहा है। पीछे-पीछे हम लोग भी पदुम-पराग को प्रणाम करते हुए चले आ रहे हैं। सारी दुनियां इस समय स्वामी जी महाराज को ही देख रही है।

एक बड़ी ही लम्बी एक बारात जा रही थी। स्वामी जी महाराज को वे देख लौट आए। गाड़ियां एक बहुत विशाल वट वृक्ष के नीचे खड़ी हैं जो नदी के तट पर ही है। स्वामी जी महाराज अपने पूरे वस्त्र को धारण कर एक सोर (जड़) पर बैठ गये और कहे कि लाओ थोड़ा पानी पी लें।

इतने ही देर में बाराती सब आ गये और सबों ने स्वामी जी महाराज को प्रणाम किया। दुल्हे के पिता ने दुल्हे से कहा बेटा महात्मा जी को पांव छू कर प्रणाम करो दुल्हा ने ऐसा ही किया। इस पर स्वामी जी महाराज बहुत ही प्रसन्न हुए और उनके रहन सहन तथा रिति रिवाज के बारे में पूछने लगे। इसके साथ साथ उनसे स्वामी जी महाराज ने कहा कि

Scanned by CamScanner

आप लोग यदि मछली मांस खाते हों तो मत खाना। इस पर सबने कहा महाराज हम लोग कुछ नहीं खाते पीते हैं। और हम लोग ब्राह्मण हैं धर्म को मानते हैं।

इस पर स्वामी जी महाराज ने कहा अच्छा इधर के ब्राह्मण तो बहुत अच्छे हैं। यह कहते हुए चलने के लिये तैयार हो गये और सबका प्रणाम स्वीकार कर गाड़ी में सवार हो आगे बढ़ चले।

कालसिन नदी में स्नान कर चलने के बाद स्वामी जी महाराज बीच-बीच में कई जगहों पर रुकते हुए मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध नगरी देवास में पहुँचे। देवास में पानी पीया गया और पेट्रोल लेने के बाद वहां से चल दिए देवास से इन्दौर करीब ४५ मील है।

इन्दौर से ६ मील पहले ही एक मंगलिया नामक ग्राम है जिसमें एक जगरनाथ दयाल नामक व्यक्ति रहते हैं।

स्वामी जी महराज देवास से चल कर इसी मंगलिया गांव में सड़क के एक किनारे आकर रुक गये और जगन्नाथ दयाल को बुलवाये। उनसे स्वामी जी महराज बड़े ही प्यार से मिले तथा उनको हाल चाल और खेती-बारी की हाल चाल पूछे। स्वामी जी महराज ने हम लोगों से कहा कि जानते हो यहां गेहूँ का खेती बिना सिंचाई के ही होती है यहां की मिट्टी काली है।

पुनः स्वामी जी महराज श्री जगन्नाथ जी के परिवार की पूरा हाल पूछने लगे और उन्होंने अपनी सारा हाल एक एक करके बताया।

बाद में स्वामी जी महराज ने कहा कि आज के ३५ वर्ष पूर्व मैं इसी गांव में इन्हीं के घर में वर्षा के समय में महीनों रह कर साधना किया करता था। ये लोग बड़े ही प्यार से रहते थे। क्या है मालिक की मौज। इस वर्ष दयालु प्रभू अपने हर ३५ वर्ष पूर्व वाले परिचितों से मिलते जा रहे हैं।

ऐसा लगता है कि स्वामी जी महराज ने अपने साधना काल में ही पूरे भारत को घेर लिया तथा भारत की पूरी परिक्रमा कर चुके हैं। यही कारण है कि आज इतनी बड़ी बड़ी परिक्रमायें निकालीं जा रही हैं। इसमें अवश्य ही कोई बहुत बड़ा राज है। जो समय आने पर ज्ञात होगा।

इसके बाद मंगलिया से चलकर स्वामी जी महाराज सीधे इन्दौर महानगरी में श्री गणेश प्रसाद जी के यहां १ बजे पहुँचे। इधर इन्दौर के प्रेमी प्रतीक्षा करते-करते हताश हो गये थे। और अब हार सा मान सब अपने अपने घर को लौट गये थे।

परन्तु स्वामी जी महाराज के पहुँचते ही सबमें नया उल्लास आया और समाचार पा कर सबके सब भागे चले आये। प्रभू का दर्शन पा कर सबने अपनी तपन बुझायी। चरणरज को पा कर सभी शान्त हुए। सब में अपार हर्ष है। सब एक दूसरे को प्रसन्न मुद्रा में देख रहे हैं।

आज सायंकाल का सतसंग भमौरी गांव में है जहां पर पूरी तैयारी हो चुकी है। पूरे शहर में स्वामी जी महाराज के आने का पूरा समाचार फैल गया है। रिक्शे वाले से लेकर बड़े से बड़े सभी लोग इस बात को जान रहे हैं कि 'जयगुरुदेव' स्वामी का सतसंग शहर में ४ मई से २१ मई तक चलता रहेगा।

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिम्बबर, सन् ७०

दिल्ली कार्यक्रम में जाने वाले ट्रेन यात्रियों के लिए सूचना

१-प्रेमियों की सेवा तथा सहायता के लिए "जय गुरुदेव स्वागत समिति दिल्ली" का बैच दाहिने हाथ में लगाये हुए कुछ प्रेमी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर मिलेंगे जो आप की हर प्रकार की सेवा करने के लिए तैयार रहेंगे।

२-साथ ही जो प्रेमी झुण्ड में १०, २०, ५० के आयें वे स्टेशन पर उतरने के बाद सब के हाथ में झण्डे अवश्य होंवे तथा आधे घंटे तक स्टेशन पर रुक कर प्रार्थना अवश्य बोलें इससे काफी प्रचार होगा।

३-जो नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुँचे वे जूलूस के रूप में रामलीला मैदान तक प्रार्थना करते हुए आवें। यह स्टेशन रामलीला मैदान से बिलकुल लगा हुआ है।

स्वामी जी की दया का परिचय

हमारे ग्राम में एक गरीब सतसंगी, जिसका नाम विदुर दूबे है, वे दिल्ली के खर्च के लिये १५ के० जी० गेहूँ देने की इच्छा किये थे। जब देने का समय आया तो उनके लड़के ने कहा, कि घर में कुल पन्द्रह ही के० जी० गेहूं बचा है जिसमें ५ के० जी० ले जाइये दे दीजिये १० के० जी० बोया जायेगा। पर विदुर दुबे को अपना हौसला पूरा करना था। कुल १५ के० जी० गेहूं सतसंग केन्द्र पर जमा कर आये। इस हरकत से उनका लड़का दुखी हुआ कि खेत में क्या बोया जायेगा। सोचा कि जब बो दिया जायेगा उसके तीसरे दिन मैं विदुर जी के दरवाजे पर बैठा था। उनका लड़का घर में से हंसता हुआ हाथ में एक मूठी गेहूँ लेकर बाहर आया और कहा कि देखिये घर में एक खोन्हा में गेहूँ मिला है जिसको हम लोग नहीं जानते थे। यह १० के० जी० था।

विक्रमा दित्य दुबे
ग्राम नीबी सेनी, पो० नीबी दुबे
जि० गोरखपुर

आगे लोग नकल करेंगे

परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि जब जन जागरण और मानव प्रेम के प्रसार हेतु प्रभात फेरियां निकालना शुरू किया तो लोग उसकी नकल करने लगे। जिन कार्यक्रमों को अपनी विधि से करते हैं तो लोग देखा देखी इसी की नकल करने लगते हैं।

आगे समन आ रहा है। बहुत से नकल करने वाले निकलेंगे। मगर लोग असल और नकल को पहचान ही लेंगे। फिर भी लोगों को सावधान रहना चाहिये।

अमर सन्देश के लिए

परम पूज्य स्वामी जी महाराज की अमर वाणी अमर सन्देश को स्वयं पढ़िये और दूसरों को पढ़ाइये। अब तक ग्राहक न बने हों तो अब से ६) मनीआर्डर से भेज कर ग्राहक बन जाइये।

पता है:- व्यवस्थापक, अमर सन्देश २३, पाण्डेय बाजार, आजमगढ़। उ० प्र०

Scanned by CamScanner

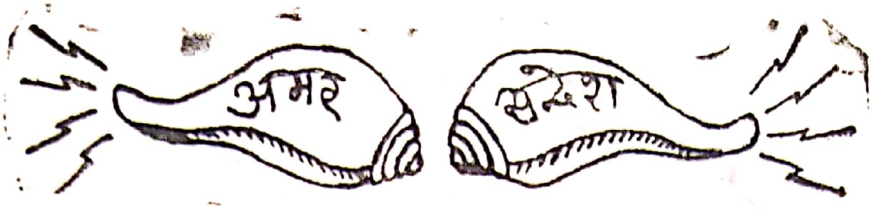

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर, सन् ७०

बाल संघ की प्रार्थनायें

[१]

जय गुरुदेव के सच्चे बच्चे,
हम हैं सच्चे देश के ।टेक।
सबसे ऊंचा भाग हमारा,
शांति सुखद रस देने वाला ॥
सबको हर्षित करने वाला,
शिक्षा जय गुरुदेव के। जय०
शाकाहार गुण सात्विक भोजन
हमको निसदिन खाना है ॥
अंडा, मुर्गी, मछली कुभोजन,
सबको हमें छुड़ाना है ।
जन जन में संदेश गुरु का,
हमको यह बतलाना है ॥
मछली,मांस व मदिरा छोड़ो,
सुनो सत्संग जयगुरुदेव के । जय०
नंगे सिर नहीं रहना हमको,
सिर पर कपड़ा रखना है ॥
मात,पिता गुरु जन बड़ों को,
सादर शीश झुकाना है ।
सदाचार के सुन्दर गुण को,
हमें सदा अपनाना है ॥
शाकाहारी सदाचारी हम,
ऋषियों के खानदान के । जय०
जय गुरुदेव हमारे प्यारे,
पिता पूरण परमात्मा हैं ॥
जीते जी मोक्ष देने वाले,
लोक परलोक के दाता हैं ।
आओ मिलकर साथ चलें हम
पथ पर जय गुरुदेव के ॥

-:❀(०)❀:-

[२]

हमारे सतगुरु जयगुरुदेव महराज
परम पूज्य सिरजन हार,
तुम्हारी जय होवे ।
छिन छिन रक्षा करो हमार,
सफल हो जीवन का हर कार
तुम्हारी जय होवे ।
ब्रह्मचर्य रहें व बुद्धि पावें.
नित देखें परम प्रकाश,
तुम्हारी जय होवे ।
इन्द्रिय जीत सच्चा सतसंगी
बने जीवन में ऊंच महान
तुम्हारी जय होवे ।
तुममें नित हो परतीति
सफल हो लोक और परलोक
तुम्हारी जय होवे ।
शिष्ट व्यवहार सदाचारी हो
नम्र स्वभाव भरे सद्भाव
तुम्हारी जय होवे ।
अपनी शक्ति हमें गुरु दीजे
जिससे हम होवें गमखोर,
तुम्हारी जय होवे ।
सेवक बनें सेवा करें सबकी
करें आरती धुर दरबार
तुम्हारी जय होवे ।
शाकाहार करें जीवन भर
परम पूज्य परसाद
तुम्हारी जय होवे ।
दैहिक दैविक भौतिक दुख सब
सबसे हो छुटकार
तुम्हारी जय होवे ।
छिन छिन सुमिरन करें तुम्हारी
तुममें हम होवे हर सांस
तुम्हारी जय होवे ।
सच्चा योगी बने जनक सा
मीरा, पलटू, भक्त प्रह्लाद
तुम्हारी जय होवे ।
अंधकार सब छिन्न भिन्न हो
भक्ति की फैलावें हम ज्योति
तुम्हारी जय होवे ।
शाकाहारी सदाचारी बालसंघ के
हम हों सच्चे पथिक अगार
तुम्हारी जय होवे ॥

Scanned by CamScanner

पूर्वी क्षेत्रों के दौरे का आंखों देखा वर्णन

ग्राम अहिरौली में महान आध्यात्मिक सतसंग हुआ और ६८ आदमियों ने नामदान लिया ।

१३-११-७० को सिसवा बाजार में सतसंग हुआ। १४-११-७० को गोरखपुर में विश्राम रहा। तब गोरखपुर के प्रेमियों से सतसंग की बाते करते रहे तथा दि० १५-११-७० का सतसंग महाराणा प्रताप इन्टर कालेज गोरखपुर के मैदान में अचानक आज सतसंग की तैयारी देख तथा भव्य धवल स्वच्छ चाँदनी के प्रकाश को भी मात करने वाला ऊंचा सिंहासन देख कर गोरखपुर निवासियों के होस उड़ गये।

भविष्य वाणियों को सुन कर सभी में जागृति आयी। धर्म की ओर बढने की चुपकी भावना उठ खड़ी हुई और दौड़-दौड़ कर सब सामने आये। बड़े-बड़े दिग्गज भी कारों में बैठ कर हजूर की अमृत भरी भविष्य वाणियों को सुने। कुछ चोरी से तो कुछ सम्मुख आकर। कुछ मान मर्यादा की ओट में इधर-उधर छिपते रहे। परन्तु सतसंगियों की पैनी दृष्टि से कौन बच सकता है। सभी पहचाने गये। धर्म विडम्बना में फंसे तमाम महात्मा भी सामने आये। और उन्होंने दाता दयालु से कुछ सबक ली।

गोरखपुर का यह सतसंग बहुत प्रभाव कारी रहा। सभी के कान खड़े हो गये।

परम पूज्य स्वामी जी महराज की भविष्य वाणियां जो आज मंच पर पहली बार आईं।

दाता दयालु ने बहुत कुछ समझाया और अन्त में कहा कि "निकट भविष्य में ऐसा समय आ रहा है कि आदमी को उठाने वाले आदमी नहीं मिलेंगे और लाशें सड़ेंगीं। दैवी प्रकोप को कोई रोक नहीं सकता।

अगर लोगों ने अखाद्य वस्तुओं (मांस मछली, अंडा, मुर्गी इत्यादि जीवों को खाना तथा मदिरा पीना) का सेवन बन्द नहीं किया तो ऐसी वस्तुओं का सेवन करने वाले अध्यापक बड़े-बड़े अधिकारी तथा मिनिस्टर बरखास्त कर दिए जाएँगे। और उनके कोई मुकदमें नहीं सुने जाएँगे साथ ही उनकी पेंसनें भी बन्द कर दी जाएगीं

साथ ही साथ यह भी बताए कि हर जिलों में ५ महात्मा होंगे जो लोगों का सदाचार और शाकाहार का प्रमाण पत्र देंगे। तब लोगों को नौकरियां मिलेंगी तथा एम० एल० ए० और एम० पी० को भी प्रमाण पत्र लेना पड़ेगा तब उनको जनता अपना समर्थन देगी। यह सब बात जल्द ही आप के सामने आयेगी। तथा सन १९७२ के बाद शासन उन लोगों के हाथ में होगा जिनकी आप अभी कल्पना भी नहीं करते हो।"

आप के भारत वर्ष में ऐसी विकृतियां पैदा हो गई हैं जो निकट भविष्य में अपना झलक दिखायेंगी। तथा वह किसी की भी एक भी सिफारिस नहीं सुनेंगे। उनके पास असत्य के प्रति लेस मात्र भी दया नहीं होगी। यह सब आप सब को जल्द ही देखने को मिलेगा।

इसके बाद मैं आत्मा परमात्मा को मानता हूँ। सत्य को मानता हूँ। देवी देवता को मानता हूं।

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर, सन ७०

तथा परमात्मा से मिलने का रास्ता जानता हूँ और सबको उस रास्ते को बताता हूँ। जिससे परमात्मा का दर्शन जीते जी इसी शरीर से हो जाता है। मैं दिव्य दृष्टि ज्ञान चक्षु तीसरा नेत्र, शिव नेत्र को खोलता हूं जो सब में है।

मांस मदिरा बुद्धि को नष्ट करके चरित्रों को समाप्त कर देते हैं।

परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा।
परनिन्दा सम अघ न गरीशा ॥

ब्राह्मणो, क्षत्रियो, वैश्यो, हरिजनो यदि आप अपने को हिन्दू कहने का गर्व करते हैं, धर्म भगवान और जीवात्मा में विश्वास करते हैं तो आप को गीता, रामायण, भागवत, पुराण, राम, कृष्ण, देवी देवता की सपथ है कि आप आज से ही मान्स, मछली, मुर्गी, अण्डा शराब, ताड़ी, गांजा, भांग का प्रयोग त्याग दें, शाकाहारी और सदाचारी बनें आप हिन्दू नाम को कलंकित न करें।

जिस लक्ष्य के लिए यह मनुष्य शरीर मिला उसे मरने के पहले पूरा कर लें। अर्थात महात्माओं से शिवनेत्र खोलने का उपाय लेकर अपने गृहस्थाश्रम में रहकर ऊपर के लोकों का अनुभव कीजिये और ईश्वर की प्राप्ति कीजिए।

आप से प्रार्थना है कि आप मानव धर्म का पालन कर प्रेम त्याग, सेवा अतिथि सत्कार, साधु सेवा को जीवन में लायें।

आगे जीव हिंसकों को भयानक सजायें मिलेंगी। आप उन्हे भोगने को तैयार हो जाइए।

विश्व इतिहास का अनूठा साइकिल परिभ्रमण देश और दुनियां को बदलने चल पड़ा

धर्म की स्थापना, मांसाहार व मादक पदार्थों के परित्याग, उग्र तोड़ फोड़ आन्दोलनों की समाप्ति और ईश्वर भक्ति के प्रचार हेतु जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ का पचासों हजार साइकिल पथिकों का परिभ्रमण २६ नवम्बर ७० को गोरखपुर से चलकर, उसी रात को बस्ती, २७ को अयोध्या, २८ को लखनऊ, ९ को कानपुर, ३० को बेवर, १-१२-७० को अलीगढ़, २ को गाजियाबाद पड़ाव डालता हुआ, ३ दिसम्बर को नयी दिल्ली के रामलीला मैदान में पहुँचेगा। वहां ३, ४ व ५ दिसम्बर को सतसंग होगा।

इस जलूस का दर्शन करके तथा रात्रि ७ बजे से ११ बजे तक विभिन्न पड़ावों पर सतसंग सुनकर अपने कष्टों बीमारियों में ४ आने से ६ आने तक लाभ उठाइए।

समाचार पत्रों के सम्पादक हमारे कार्यक्रमों की कोई सूचना छापने का कष्ट न करें। आप द्वारा छपे हमारे समाचार असत्य माने जायेंगे।

जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ कृष्ण नगर, मथुरा। फोन नं. २४१
संस्था के संचालक परम सन्त स्वामी
तुलसी दास जी महराज

Scanned by CamScanner

वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर, सन ७०

सम्वाददाताओं द्वारा किये गये प्रश्नों का उत्तर

१ प्रश्न-जय गुरुदेव शब्द का अभिप्राय क्या है ?

उत्तर-जय गुरुदेव नाम उस अनामी प्रभू का है जिसको राम, कृष्ण, मुहम्मद, ईसा, नानक, कबीर आदि ने सिर झुकाया है और उनके चरणों में रह कर अपने आप को पहचान कर संसार का आदर्श उपस्थित किया।

२ प्रश्न-आप का जन्म स्थान कहां है ?

उत्तर-मेरा जन्म स्थान भारत के उत्तर प्रदेश के एक छोटे से ग्राम में है।

३ प्रश्न-आप ने शिक्षा किस विद्यालय में कहां तक प्राप्त की ?

उत्तर-मैंने प्राथमिक शिक्षा आप की तरह शाला में प्राप्त कर आध्यात्मिक शिक्षा श्री गुरु महराज के चरणों में रह कर प्राप्त की। गुरु आज्ञानुसार उसका प्रचार कर रहा हूँ।

४ प्रश्न इस धर्म का प्रचार भारत में ही क्यों कर रहे हैं ? अन्य देशों में क्यों नहीं ?

उत्तर-मेरा उद्देश्य है पहले अपने घर परिवार को सुधार कर प्रेम, सेवा और त्याग के पथ पर चलावें जिससे दूसरे देश अनुकरण कर सकें।

५ प्रश्न-जब देश में बहुत से धर्म हैं तो आप ने नया धर्म क्यों चलाया ?

उत्तर-देश के सभी धर्मावलम्बी अपने धर्म की वास्तविकता से दूर होकर मानव धर्म से दूर हो गये हैं। जिससे आपस में कटुता, वैर, ईर्षा द्वेष पैदा हो गया है। इन कमियों को दूर कर मूल भूत सनातन मानव धर्म का प्रचार करने के लिए यह पुरातन धर्म चलाया है जिसमें किसी धर्म जाति समाज की निन्दा का स्थान नहीं है।

६ प्रश्न-क्या आप इस धर्म प्रचार द्वारा देश में खूनी क्रांति करना चाहते हैं ?

उत्तर-इस धर्म का मूल उद्देश्य मानव में प्रेम, सेवा त्याग पैदा करना है तथा प्राणिमात्र में ईश्वरीय सत्ता का बोध करा कर आध्यात्मिक जन जागरण करना है। इस धर्म में सभी प्रकार के आन्दोलन तोड़ फोड़ हड़ताल को कोई स्थान नहीं दिया गया है।

७ प्रश्न-क्या आप का इस प्रकार धर्म का प्रचार कर राज्य सत्ता को बदलने का गुप्त कार्यक्रम है।

उत्तर-इस धर्म में राजनीति में भाग लेना मना है। न राज्य सत्ता का बदलना ही इसका उद्देश्य है। उद्देश्य तो मानव मात्र का हृदय बदल कर प्रेम, त्याग, सेवा का पाठ पढ़ाना है जिससे सत्ता का परिवर्तन स्वतः होगा।

८ प्रश्न आप ने सम्वाददाता व समाचार पत्रों के लिए लिखा है कि हमारे कार्यक्रम को न छापें जब कि इस युग में समाचार पत्र ही प्रचार के प्रमुख साधन है ?

उत्तर समाचार पत्र अधिकतर असत्य समाचार छापते हैं तथा झूठी अफवाह पार्टियों द्वारा भड़काने वाला प्रचार करते हैं जिससे जनता में जोश, आतंक फैलता है जो वास्तविक मानव को उठाने वाले प्रेम, त्याग सेवा पैदा करने वाले समाचार हैं उन्हें समाचार पत्रों में स्थान नही मिलता असत्य के साथ सत्य का समावेश नहीं चाहते। इसलिए हमारे इस धर्म संघ का प्रचार जनमत स्वयं करेगा और इस तरह का होगा कि देश का कोई शहर, ग्राम इस प्रचार से महरूम न रहेगा।

Scanned by CamScanner

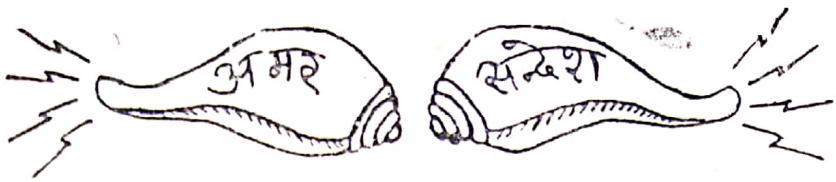

६ प्रश्न-आप के पर्चों द्वारा ज्ञात हुआ कि आप ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बतलाते हैं। आप इस मार्ग को पुस्तक में प्रकाशित कर सबको मार्ग बतलाने का कष्ट क्यों नहीं करते ?

उत्तर-ईश्वर प्राप्ति का मार्ग 'सुरत शब्द योग' 'नाम योग' है जो सभी महात्माओं ने बतलाया है। यह मार्ग प्रयोगिक व प्रत्यक्ष है जो नियमित अभ्यास द्वारा प्राप्त होता है। इसके लिए हर व्यक्ति को समय समय पर रुकावटों का सामना करना पड़ता है जो स्वयं महात्मा जी उन रुकावटों को दूर करते हैं। सन्तों द्वारा प्रकाशित हर पुस्तक में यह मार्ग है किन्तु जो इस मार्ग को प्राप्त कर चुका है वही इसे प्रयोगिक कर अभ्यास करा सकता है।

१० प्रश्न-जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ के संस्थापक कौन हैं ?

उत्तर-इस संघ का संस्थापक मैं स्वयं हूं।

११ प्रश्न-क्या यह संस्था रजिस्टर्ड है।

उत्तर-जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ रजिस्टर्ड है।

१२ प्रश्न-आप के यहां सभी जाति समान क्यों रहती है।

उत्तर-मानव मात्र एक है। सभी उसी परम पिता परमात्मा के अंश हैं। इससे भेद भाव का सवाल नहीं उठता।

१३ प्रश्न-आप सबका सिर क्यों ढकते हैं।

उत्तर-जो भी अब तक महापुरुष हुये हैं उन्होंने हमेशा सिर ढक कर रखा है तथा सिर ढकने से सिर की शोभा है एवं भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

१४ प्रश्न-आप किसको मानते हैं ?

उत्तर-मैं आत्मा परमात्मा व प्राणी मात्र को मानता हूँ।

१५ प्रश्न-आप के अनुयायी क्या गरीब व छोटी जाति ही हैं ?

उत्तर-इस जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ में सभी जाति, वर्ग व शहर देहात के रहने वाले सभी विभागों के सरकारी कर्मचारी हैं। निर्धन-धनवान सभी हैं। इस संघ के अनुयायी गरीब अमीर छोटे बड़े का भेद भाव मिटा कर प्रेम से भाई भाई की तरह रहते हैं।

१६ प्रश्न-आप ने अब तक देश में कितने मन्दिर बनाये हैं ?

उत्तर-जय गुरुदेव धर्म प्रचारक संघ द्वारा कोई मन्दिर नहीं बनवाया गया है और न आगे बनाना है। यह मनुष्य शरीर परमात्मा द्वारा निर्मित मन्दिर है। इसे ही स्वच्छ सदाचारी शाकाहारी रख कर परमात्मा की प्राप्ति करना है।

१७ प्रश्न-आप ने यह झण्डा क्यों अपनाया है ?

उत्तर यह झण्डा विश्व में मानव-मानव जाति-जाति सम्प्रदाय-सम्प्रदाय, ऊंच नीच, गरीब अमीर पढ़े-अनपढ़ का भेद भाव मिटाने का प्रतीक है क्योंकि 'जय गुरुदेव' नाम परमात्मा का है। इसे योग साधन द्वारा जगाया गया है।

१८ प्रश्न-आप इस शुभ जागरण हेतु सरकार का सहयोग क्यों नहीं लेते ?

उत्तर-जब तक हम अपना कार्य स्वयं करने में समर्थ हैं तब तक सरकार द्वारा सहायता की आवश्यकता नहीं है।

१९ प्रश्न-आप के अनुयायी पुरुषों के बजाय महिलायें अधिक हैं ?

उत्तर-इस धर्म प्रचारक संघ में अधिकतर पति पत्नी साथ ही दीक्षा ग्रहण करते हैं तथा प्रौढ़ बालक बालिका भी दीक्षा प्राप्त कर साथ साथ अभ्यास करते हैं। महिलाओं में इसके प्रति अधिक आस्था है।

२० प्रश्न-स्त्री, पुरुष प्रौढ़ बालक बालिकाओं के अलावा छोटे बच्चों के लिए भी कोई संस्था है।

Scanned by CamScanner

उत्तर-२-१०-६९ गांधी जन्म शताब्दी पर छोटे बालक बालिकाओं के लिए शाकाहारी सदाचारी बाल संघ की स्थापना की है जिसमें रह कर बालक माता-पिता अध्यापक व पूज्यजनों को प्रतिदिन प्रणाम करते हैं। किसी प्रकार की नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं करते हैं। कोई आन्दोलन नहीं करते हैं। किसी जाति समाज पार्टी व व्यक्ति की निन्दा नहीं करते हैं। इसके सदस्य बालक बालिका कई हजारों की संख्या में भारत में हो चुके हैं।

२१ प्रश्न-आप मांस मछली अण्डे शराब भांग गांजा अफीम खाना बन्द क्यों करते हैं ?

उत्तर-मांस मछली अण्डे खाने से मानव में पाशविक वृत्ति बढ़ कर क्रूरता आती है तथा नशीली वस्तुओं के सेवन से उत्तेजना बढ़कर उच्छ्रखलता बढ़ती है जिससे मनुष्य की सात्विक वृत्ति समाप्त होकर राक्षसी वृत्ति बढ़ती है जो देश समाज के लिए घातक है। इसका सेवन करने वाला परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता तथा अहिंसा वृत्ति समाप्त हो जाती है और समाज का भी भला नहीं कर सकता।

२२ प्रश्न-गरीबी दूर करने का क्या उपाय है ? जो कि देश की सबसे बड़ी समस्या है ?

उत्तर-जब मानव मात्र में ऊंच नीच अमीर गरीब का भेद भाव मिट जायेगा प्रेम त्याग सेवा की भावना होगी तभी देश की गरीबी दूर होगी तथा सच्चा समाजवाद आवेगा।

२३ प्रश्न-आप के अनुगामी जो इतने दूर से आये हैं तथा इतने दिन मार्ग व सतसंग में रहेंगे उनके भोजन व्यय की व्यवस्था किस प्रकार होगी ?

उत्तर-प्रत्येक सतसंगी अपनी व्यवस्था स्वयं करता है तथा सभी सतसंगी मिलकर आपस की समस्या का समाधान सहयोग प्रेम से कर लेते हैं।

२४ प्रश्न-कार्य संचालन हेतु अर्थ व्यवस्था किस प्रकार की जाती है ?

उत्तर-कार्य संचालन हेतु अर्थ संग्रह की आवश्यकता नहीं है। सभी अपनी अपनी व्यवस्था स्वयं करते हैं ?

२५ प्रश्न-इस समय बढ़ती हुई जन संख्या को रोकने के बारे में आप के क्या विचार हैं ?

उत्तर-बढ़ती हुई जन संख्या का सही और उचित उपाय धार्मिक भावना है जिससे स्त्री पुरुष ब्रह्मचर्य का पालन कर समस्या का सामाधान स्वयं कर सकते हैं।

२६ प्रश्न-सुना है आप गीता रामायण आदि धर्म ग्रन्थों को नहीं मानते हैं ?

उत्तर-मैं गीता रामायण, कुरान, पुराण बाइबिल सभी को मानता हूं तथा उनमें जो शिक्षा अंकित है उन पर प्रत्येक मानव को चलाने का प्रयत्न प्रयोगिक रूप से करता और कराता हूं।

२७ प्रश्न-आप अपने अनुयायियों को राजनीति से अलग क्यों रखते हैं ?

उत्तर-इस समय देश की राजनीति वास्तविकता से दूर होकर अपने स्वार्थ साधन उच्छ्रखलता आदि की ओर बढ़ रही है जिससे देश में तरह तरह के आन्दोलन हड़ताल तोड़ फोड़ हो रहे हैं जो देश व समाज के लिए घातक हैं। मैं धर्म व न्यायपूर्ण राजनीति में विश्वास करता हूं इस लिए मैं अपने अनुयायियों को इस जलती आग में डाल कर मानवता से दूर नहीं करना चाहता तथा देश में जो हानियां, नुकसान हो रहा है उनका भागीदार नहीं बनाना चाहता।

Scanned by CamScanner

अमर सन्देश
वर्ष १३, अंक ६
दिसम्बर सन् ७०

२८ प्रश्न-आप का संघ सरकार के अनुचित आदेश व कार्यवाही रोकने के लिए किस मार्ग का अनुसरण करेगा?

उत्तर-हमारा संघ राज्य आज्ञा का पूर्ण रुप से पालन करता है। आन्दोलन तोड़ फोड़ और हड़ताल द्वारा सुधार पर विश्वास नहीं करता।

२६ प्रश्न-आप गृहस्थ हैं या विरक्त?

उत्तर-मैंने दीक्षा गृहस्थ से ली वैसे विरक्त हूं।

३०-प्रश्न-यदि देश की जनता आप को शासन सौंपे तो आप क्या करेंगे?

उत्तर-प्राचीन काल में भी जब राजा लोग शासन चलाने में असमर्थ हुये तो ऋषि मुनियों को राज्य सौंपा तथा राज्य कार्य सुचारु रूप से चलाने पर सुधार होने पर राज्य वापस सौंप दिया गया।

३१ प्रश्न-क्या आप के सभी अनुयायी ईश्वर को प्राप्त कर चुके हैं?

उत्तर-हमारे सभी अनुयायी इस मार्ग पर चल रहे हैं जिस तरह शाला में कक्षा पास की जाती है उसी प्रकार दर्जे बदर्जे बढ़ रहे हैं। कुछ ईश्वर को भी प्राप्त कर चुके हैं।

३२ प्रश्न-सन १९७२ तक इस पथ के पथिक एक करोड़ से अधिक हो जायेंगे तथा उनके द्वारा अन्य व्यक्तियों को इस मार्ग पर लाया जावेगा जिससे प्रत्येक मानव त्याग, सेवा प्रेम का पाठ पढ़कर देश समाज की सेवा सही ढंग से कर सकेगा तथा आने वाले विघ्नों का सामना धैर्य के साथ कर सकेगा जिससे भारत का नाम विश्व में हो सकेगा।

३३ प्रश्न-आप यह जुलुस क्यों निकालते हैं?

उत्तर-हम जुलुस इसलिए निकालते हैं कि प्रत्येक मानव प्रेम, त्याग सेवा को और अग्रसर होकर देश समाज की सेवा का अनुकरण कर सके।

नोटः-शंका व प्रश्नों का अन्त नहीं है। शेष स्वयं सतसंग में उपस्थित होकर अपना समाधान कर लें।

जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ मथुरा वार्षिक मीटिंग की सूचना

सभी सम्बन्धित सदस्यों को और कार्यकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ,की वार्षिक साधारण मीटिंग वार्षिक भण्डारे के अवसर पर ६-१२-७० को नये आश्रम पर, योगस्थली मथुरा में होगी। सभी सम्बन्धित लोग वहां मीटिंग में अवश्य पहुँचें।

[नोटः—जो सतसंगी जय गुरुदेव धर्म प्रचारक संघ के सदस्य हैं वे अपना वार्षिक शुल्क १० रू० जमा करके सदस्यता प्रमाण पत्र प्राप्त कर लें। जो लोग संघ के नये सदस्य बनना चाहें वे भी उक्त समय पर मथुरा में १० रू० जमा करके सदस्य बन सकते हैं।

बल्ब तथा दरी का आदेश

परम पूज्य स्वामी जी महराज ने इस वर्ष नये आश्रम पर कृष्ण नगर मथुरा भण्डारे के शुभ अवसर पर आने वाले प्रेमियों को आदेश दिया है कि वे अपने साथ एक बल्ब राउटी में लगाने के लिए तथा दरी जमीन पर बिछाने के लिए जरूर लावें जो वे अपने साथ जाते समय फिर लेते जावेंगे।

जो सतसंग केन्द्र हैं और जहां से लोग १०-२० के समूह में आते हैं वे अपने साथ बड़ी दरी या बिछावन २, ४ जरूर लावें जिससे प्रबन्ध में सुविधा हो। वे अपनी लाई दरी या बिछावन अपने साथ वापस लेते जावें।

Scanned by CamScanner

हमारे प्रकाशन

स्वामी जी की रचित पुस्तकें

१–साधक विधन निरूपण	३५ पैसे
२–याद रक्खो गुरु के बचन	१५ पैसे
३–प्रति दिन के विचार	३० पैसे
४–परमार्थी उपदेश	५० पैसे
५–सन्तमत में सच्चा निर्माण	३० पैसे
६–तुलसी बाणी (रामायण की चुनी चौपाइयों का स्वामी जी द्वारा संग्रह	४० पैसे
७–यम लोक मार्ग	२५ पैसे
८–ज्ञान रश्मि	३५ पैसे
९–हम गुरु को कितना मानते हैं स्वामी जी का एक स्मरणीय पत्र	०३ पैसे
१०–उपरोक्त पुस्तकों का सेट सजिल्द गत्ते की जिल्द	३·०० रु०
कपड़े की जिल्द	३·५० रु०
११ अमर सन्देश की एक एक वर्ष की फाइल वर्ष १, २, ३ प्रत्येक	६·०० रु०

पद्य में पुस्तकें

१२–बिनती प्रार्थना संग्रह पूरी सजिल्द	२·०० रु०
जुजबन्दी सिलाई और कपड़े की जिल्द	२·५० रु०
१३–जन जन में होगी क्रांति	५० पैसे
१४–बिनती प्रार्थना संग्रह भाग ३	५० पैसे
१५–अमर बानी (स्वामी जी महराज चिरौली के शब्दों का संग्रह	अप्राप्त

अंग्रेजी में पुस्तकें

१६–JAI GURUDEO (THE MESSEGE ETERNAL)	Rs. 1·50
१७–YAM LOK MARG	30 P.
१८–Glimpses of Satsang	50 P

पुस्तकें मंगाने के नियम

१–पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय सहित अग्रिम आना चाहिये। पुस्तकों के एक सेट या कम पर डाक व्यय १·२५ रू० डाक व्यय लगेगा।

२–जो सतसंगी इन पुस्तकों की बिक्री करना चाहें और इस प्रकार स्वामी जी के साहित्य का प्रचार और प्रसार करने में योग देना चाहें उन्हें मूल्य में १० प्रतिशत छूट दी जायेगी। किन्तु उन्हें कम से कम १० सेटों का आर्डर एक साथ देना होगा मूल्य अग्रिम आना चाहिये। १० सेट अजिल्द पुस्तकों का मूल्य ४६·३० रू० तथा सजिल्द का मूल्य गत्ते की जिल्द का ५०·०० रू० है। कपड़े की जिल्द का मूल्य ०·०० रू० है। माल रेलवे से भेजा जायेगा इसलिए अपने रेलवे स्टेशन का भी नाम अवश्य लिखें।

३–पुस्तकों के १०० सेट या ५०० रू० से अधिक के आर्डर पर मूल्य में ५% छूट दी जायेगी। मूल्य अग्रिम आना जरूरी है। आर्डर में रेलवे स्टेशन का नाम तथा कौन सी रेलवे है यह लिखना जरूरी है।

४–अमर सन्देश के पुराने अंक फुटकर प्राप्त नहीं हैं। अभी छप रहे हैं। पुराने अंकों की फाइल क्रमशः बनाई जा रही है। वर्ष १, २ और ३ तथा वर्ष १०, ११ और १२ की फाइलें लगभग तैयार हैं। इनका मूल्य प्रत्येक का ६·०० रू० है। डाक से मंगाने पर प्रत्येक का डाक व्यय १·०० रू० अलग से लगेगा। बिक्री करने वालों को इनके मूल्य में भी १०% छूट मलेंगी।

रूपये भेजने तथा पुस्तकें प्राप्त करने का पता:—

व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार
आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)

Scanned by CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये। ये व्यक्तिगत सामाजिक मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं आप भी इसे पढ़ कर समय के संग आगे बढ़िये। स्वयं पढ़िये और इष्ट-मित्रों को पढ़ाइये।

मधु संचय

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तःकरण को पवित्र बना कर गुरु के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

गुरु के बचन

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरु मिलना चाहिये

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर, मथुरा एवं मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित।